|| जैन भवन ||

तित्थयर

वर्ष : २९ अंक : ७ अक्टूबर २००५

ज्ञान से पदार्थों को जाना जाता है,
दर्शन से श्रद्धा होती है,
चारित्र से कमास्त्रव की रोक होती है,
और तप से शुद्धि होती है।

卐

Sethia Oil Industries Ltd.

Manufacturers of De-oiled Rice Bran, Mustard Deoiled Cakes, Neem deoiled Powder, Ground-nut De-oiled Cakes, Mahua deoiled cakes etc. And Solvent Extracted Rice Bran Oil, Neem Oil, Mustard Oil etc.

Plant
Post Box No. 5
Lucknow Road
Sitapur - 261001 (U.P.)
Ph: 42017/42397/42073
(05862)
Gram - Sethia - Sitapur
Fax: 42790 (05862)

Registered Office
143, Cotton Street
Kol - 700 007
Ph: 238-4329/
8471/5738
Gram - Sethia Meal

Executive Office
2, India Exchange Place
Kolkata - 700 001
Ph: 2201001/9146/5055
Telex: 217149 SOIN IN
FAX: 2200248 (033)

तित्थयर

श्रमण संस्कृति मूलक मासिक पत्रिका

वर्ष - २९ | अंक - ७, अक्टूबर | २००५

लेख, पुस्तक समीक्षा तथा पत्रिका से सम्बन्धित पत्र व्यवहार के लिये
पता - Editor : Titthayar, P-25, Kalakar Street, Kolkata - 700 007
Phone : 2268-2655, Website : www.info@jainbhawan.com

विज्ञापन तथा सदस्यता के लिये कृपया सम्पर्क करें —
Secretary, Jain Bhawan, P-25, Kalakar Street, Kolkata - 700 007
Subscription for one year : Rs. 55.00, US$ 20.00,
for three years : Rs. 160.00, US$ 60.00,
Life Membership : India : Rs. 1000.00, Foreign : US$ 160.00

Published by Smt. Lata Bothra on behalf of Jain Bhawan from
P-25, Kalakar Street, Kolkata - 700 007, Phone : 2268-2655
and Printed by her at Arunima Printing Works, 81, Simla Street
Kolkata - 700 007 Phone : 2241-1006

संपादन
डॉ. लता बोथरा,

॥ जैन भवन ॥

अनुक्रमणिका

क्र. सं.	लेख	लेखक	पृ. सं.
१.	गृहस्थ-धर्म	श्री जवाहरलाल जी म.सा.	४०५
२.	भगवान् महावीर और बुद्ध के निर्वाण का ऐति[illegible]क विश्लेषण	आचार्य श्री हस्तीमलजी महाराज	४१७
३.	जीवन और मृत्यु	डॉ. सागरमल जैन	४२८
४.	वैर का विपाक		२२९

मूल्य - १०.०० रूपये

कवरपृष्ठ : जैसलमेर के ज्ञान भंडार से प्राप्त श्री सरस्वती देवी का चित्र।

Composed by:

Jain Bhawan Computer Centre, P-25, Kalakar Street Kolkata - 700 007

गृहस्थ–धर्म

श्री जवाहरलाल जी म. सा.

सम्यक्त्व

सम्यक्त्वरत्नान्न परं हि रत्नं,
सम्यक्त्वमित्रान्न परं हि मित्रम्।
सम्यक्त्वबन्धोर्न परो हि बन्धुः,
सभ्यक्त्वलाभान्न परो हि लाभः।

जैन शास्त्रों में तीन रत्न प्रसिद्ध हैं, उन्हें रत्नत्रय भी कहते हैं; मगर सम्यक्त्व-रत्न उन तीनों में प्रधान है। सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान और सम्यक्चारित्र, ये तीन रत्न हैं। पर सम्यग्ज्ञान और सम्यक्चारित्र का मूल सम्यग्दर्शन ही है। सम्यग्दर्शन की मौजूदगी में ही ज्ञान और चारित्र में सम्यक्ता आती है। जहाँ सम्यग्दर्शन नहीं, वहां सभ्यग्ज्ञान भी नहीं और सम्यक्चारित्र भी नहीं। सम्यग्दर्शनहीन ज्ञान और चारित्र मिथ्याज्ञान और मिथ्याचारित्र कहलाते हैं।

सम्यग्दर्शन न हो तो ज्ञान और चारित्र आत्मा के प्रयोजन को सिद्ध नहीं कर सकते। उनसे भवभ्रमण का अन्त नहीं हो सकता। यही नहीं, वे भवभ्रमण के ही कारण होते हैं। कहा है–

श्लाघ्यं हि चरणज्ञानवियुक्तमपि दर्शनम्।
न पुनर्ज्ञानचारित्रे मिथ्यात्वविषदूषिते।।

सम्यग्दर्शन कदाचित् विशिष्ट ज्ञान और चारित्र से रहित हो, तब भी वह प्रशंसनीय है। उससे संसार विपरीत हो जाता है। परन्तु मिथ्यात्व के विष से विषैले विपुल ज्ञान और चारित्र का होना प्रशंसनीय नहीं है।

सम्यक्त्व से बढ़कर आत्मा का अन्य कोई मित्र नहीं है। मित्र का काम अहितमार्ग से हटाकर मनुष्य को हितमार्ग में लगाना है। इस दृष्टि से सम्यक्त्व ही सबसे बड़ा मित्र है। जब आत्मा को सम्यक्त्व की प्राप्ति हो जाती है, तब उसकी दृष्टि निर्मल हो जाती है। उसे हित-अहित का विवेक

हो जाता है। जब तक जीव मिथ्यात्व की दशा में रहता है, तब तक तो वह हित को अहित और अहित को हित समझता रहता है और उसी के अनुसार विपरीत प्रवृत्ति भी करता रहता है, किन्तु सम्यक्त्व का सूर्योदय होते ही दृष्टि का विभ्रम हट जाता है और आत्मा को सत्य तत्त्व की उपलब्धि होने लगती है । वह हेय-उपादेय को समीचीन रूप में समझने लगता है। इस प्रकार हितमार्ग में प्रवृत्ति कराने के कारण और अहितमार्ग से बचाने के कारण सम्यक्त्व परम मित्र है।

सम्यक्त्व अनुपम बन्धु है। बन्धु का अर्थ है सहायक। जब आत्मा अपने कल्याणपथ में प्रवृत्ति करने के लिए उद्यत होता है, तो सम्यक्त्व ही सर्वप्रथम उसका सहायक होता है। अन्य सहायकों की सहायता से जो सफलता मिलती है, वह क्षणिक होती है और कभी कभी उसमें असफलता छिपी रहती है; परन्तु सम्यक्त्व रूप सहायक के सहयोग से मिलने वाली सफलता चिरस्थायी होती है और उसके उदर में असफलता नहीं होती।

संसार में, विषय-कषाय के अधीन होकर जीव नाना प्रकार के पदार्थों की कामना करते हैं। मनुष्य जिनकी कामना करते हैं, वे पदार्थ इष्ट कहलाते हैं और उनके लाभ को वे परम लाभ समझते हैं। किन्तु उन प्राप्त हुए पदार्थों की वास्तविकता पर विचार किया जाय तो पता चलेगा कि उन पदार्थों से आत्मा का किंचित् भी कल्याण नहीं होता। यही नहीं, वरन् वे पदार्थ कभी कभी तो आत्मा का घोर अनिष्ट साधन करने वाले होते हैं। ऐसी स्थिति में सहज ही समझा जा सकता है कि सम्यक्त्व के लाभ से बढ़कर संसार में और कोई लाभ नहीं हैं। सम्यक्त्व उत्पन्न होते ही तीव्रतम लोभ और आसक्ति का अन्त कर देता है और फिर धीरे धीरे आत्मा को उस उच्चतम भूमिका पर प्रतिष्ठित कर देता है कि जहाँ किसी भी सांसारिक पदार्थ के लाभ की आकांक्षा ही नहीं रहती, आवश्यकता ही नहीं रहती।

सम्यक्त्व मोक्षमार्ग का प्रथम साधन कहा गया है। जब तक आत्मा को सम्यक्त्व की प्राप्ति नहीं होती, तब तक उसका समस्त आचरण, समस्त

क्रियाकाण्ड और अनुष्ठान नगण्य है। आत्म-कल्याण की दृष्टि से उसका कोई मूल्य नहीं है। कहा है—

ध्यानं दुखनिधानमेव तपसः सन्तापमात्रं फलम्;
स्वाध्यायोऽपिहि बन्ध्य एव कुधियां तेऽभिग्रहाः कुग्रहाः।
अश्लाध्या खलु दानशीलतुलना तीर्थादियात्रा वृथा,
सम्यक्त्वेन विहीनमन्यदपि यत्तत्सर्वमन्तर्गडु ः।।

सम्यक्त्व के अभाव में जो भी क्रिया की जाती है, वह आत्म-कल्याण की दृष्टि से व्यर्थ ही होती है। ध्यान दुःख का निधान होता है, तप केवल संताप का जनक होता है, मिथ्यादृष्टि का स्वाध्याय निरर्थक है, उसके अभिग्रह मिथ्या आग्रह मात्र हैं। उसके दान, शील, तीर्थाटन आदि सभी कुछ नगण्य हैं–निष्फल हैं। वे मोक्ष का कारण नहीं होते हैं।

जिस सम्यक्त्व की ऐसी महिमा है, उसकी प्रशंसा कहाँ तक की जा सकती है? प्राचीन ग्रन्थकारों ने उत्तम से उत्तम शब्दों में सम्यक्त्व की महिमा गाई है। यहां तक कहा गया है—

नरत्वेऽपि पशूयन्ते, मिथ्यात्वग्रस्तचेतसः।
पशुत्वेऽपि नरायन्ते, सम्यक्त्वव्यक्तचेतनाः।।

जिसका अन्तःकरण मिथ्यात्व से ग्रस्त है, वह मनुष्य होकर भी पशु के समान है और जिसकी चेतना सम्यक्त्व से निर्मल है, वह पशु हो तो भी मनुष्य के समान है।

मनुष्य और पशु में विवेक ही प्रधान विभाजन रेखा है और सच्चा विवेक सम्यक्त्व के उत्पन्न होने पर ही आता है।

वास्तव में सम्यग्दर्शन एक अपूर्व और अलौकिक ज्योति है। वह दिव्य ज्योति जब अन्तर में जगमगाने लगती है तो अनादिकाल से आत्मा पर छाया हुआ अंधकार नष्ट हो जाता है। उस दिव्य ज्योति के प्राप्त होने पर आत्मा अपूर्व आनन्द का अनुभव करने लगती है। उस आनन्द को न शब्दों द्वारा व्यक्त किया जा सकता है और न उपमा के द्वारा ही। उस आनन्द की आंशिक तुलना किसी जन्मान्ध को सहसा नेत्र प्राप्त हो जाने पर होने वाले

आनन्द के साथ की जा सकती है। जो मनुष्य जन्म-काल से ही अंधा है और जिसने संसार के किसी पदार्थ को अपने नेत्रों से नहीं देखा है, उसे पुण्ययोग से कदाचित् दिखाई देने लगे तो कितना आनन्द प्राप्त होगा? हम तो उस आनन्द की कल्पनामात्र कर सकते हैं। पर सम्यग्दृष्टि प्राप्त होने पर उससे भी अधिक आनन्द की अनुभूति होती है। सम्यग्दृष्टि आत्मा में समता के अद्भुद रस का संचार कर देती है, तीव्रतम राग-द्वेष के संताप को शान्त कर देती है, और इस कारण आत्मा अप्राप्तपूर्व शान्ति के निर्मल सरोवर में अवगाहन करने लगती है।

सम्यग्दृष्टि के विषय में शास्त्र में कहा है—

सम्मत्तदंसी न करेइ पावं।

—श्री आचारांग सूत्र

अर्थात् सम्यग्दृष्टि पाप नहीं करता है। चौथे गुण–स्थान से लगाकर चौदहवें गुणस्थान तक के जीव सम्यग्दृष्टि माने जाते हैं और जो सम्यग्दृष्टि बन जाता है वह नवीन पाप नहीं करता है। इस प्रकार अनुत्तर धर्म की श्रद्धा से होने से अनन्तानुबंधी क्रोध, मान, माया तथा लोभ नहीं रह पाते और जब अनन्तानुबन्धी क्रोध आदि नहीं रह पाते तो तत्कारणक (उनके कारण बन्धने वाले) पापकर्म नहीं बंधते। इसका कारण यह है कि कारण से ही कार्य की उत्पत्ति होती है। कारण ही न होगा तो कार्य कैसे होगा? कारण के अभाव में कार्य नहीं हो सकता।

इसी तरह कारण से ही मिथ्यात्व उत्पन्न होता है और जब मिथ्यात्व होता है तभी नये कर्मों का बन्धन भी होता है। संसार में मिथ्यात्व किस कारण से है? इस प्रश्न के उत्तर में यहीं कहा जा सकता है कि मिथ्यात्व का कोई न कोई कारण अवश्य है, इसीलिये मिथ्यात्व है। मिथ्यात्व का कारण हट जाने पर मिथ्यात्व भी नहीं टिक सकता। जिसे जेल में जाने की इच्छा नहीं होगी, वह जेल में जाने के कार्य नहीं करेगा। जो जेल जाने के काम करेगा उसे इच्छा न होने पर भी जेल जाना ही पड़ेगा। यह बात दूसरी है कि कोई जेल के योग्य काम न करे फिर भी उसे जेल जाना पड़े, मगर इस

प्रकार जेल जाने वालों के लिये जेल, जेल नहीं वरन् महल बन जाता है अर्थात् ऐसे लोग जेल में भी आनन्द का ही अनुभव करते हैं। इस प्रकार कारण हो तो कार्य होता ही है। अगर कोई मनुष्य कार्य का निवारण करना चाहता है तो उसे कारण का निवारण पहले करना चाहिए। इस कथन के अनुसार मिथ्यात्व को हटाने की इच्छा रखने वाले को पहले अनन्तानुबन्धी कषाय हटाना चाहिए। जिसमें वह कषाय रहेगा, उसमें मिथ्यात्व भी रहेगा। अनंतानुबन्धी कषाय जाय तो मिथ्यात्व भी नहीं रह सकेगा।

जब मिथ्यात्व नहीं रह जाता, तभी दर्शन की आराधना होती है। जब तक मिथ्यात्व है तब तक दर्शन की भी आराधना नहीं हो सकती। रोगी मनुष्य को चाहे जितना उत्कृष्ट भोजन दिया जाय, वह रोग के कारण शरीर को पर्याप्त लाभ नहीं पहुँचा सकता, बल्कि वह रोगी के लिये अपथ्य होने से अहितकर सिद्ध होता है। अतएव भोजन को पथ्य और हितकर बनाने के लिये सर्वप्रथम शरीर में से रोग निकालने की आवश्यकता रहती है। इसी प्रकार जब तक आत्मा में मित्थात्व रूपी रोग रहता है, तब तक आत्मा दर्शन की आराधना नहीं कर सकता। जब मिथ्यात्व का कारण मिट जायगा और कारण मिटने से मिथ्यात्व मिट जायगा तभी दर्शन की आराधना भी हो सकेगी। मिथ्यात्व मिटाकर दर्शन की उत्कृष्ट आराधना करना अपने ही हाथ की बात है। अनन्तानुबन्धी क्रोध, मान, माया और लोभ न रहने से मिथ्यात्व भी नहीं रहेगा और जब मिथ्यात्व नहीं रहेगा तो दर्शन की आराधना भी हो सकेगी—अनन्तानुबन्धी क्रोधादि को दूर करना भी अपने ही हाथ की बात है। कषाय को दूर करने से मिथ्यात्व दूर होता है और दर्शन की आराधना होती है। विशुद्ध दर्शन की आराधना करने वाले को कोई धर्मश्रद्धा से विचलित नहीं कर सकेगा। इतना ही नहीं किन्तु जैसे अग्नि में घी की आहुति देने से अग्नि अधिक तीव्र बनती है, उसी प्रकार धर्मश्रद्धा से विचलित करने का ज्यों-ज्यों प्रयत्न किया जायगा त्यों-त्यों धर्मश्रद्धा अधिक दृढ़ और तेजपूर्ण होती जायगी। धर्म श्रद्धा में किस प्रकार दृढ़ रहना चाहिए, इस विषय में काम देव श्रावक का उदाहरण दिया गया है। धर्म पर दृढ़ श्रद्धा

रखने से और दर्शन की विशुद्ध आराधना करने से आत्मा उसी भव में सिद्ध, बुद्ध और मुक्त हो जाता है।

२—सम्यक्त्व का स्वरूप

संसार में सभी जन सम्यग्दृष्टि रहना चाहते हैं। मिथ्या-दृष्टि कोई नहीं रहना चाहता। किसी को मिथ्या दृष्टि कहा जाय तो उसे बुरा भी लगता है। इससे सिद्ध है कि सभी लोग सम्यक्‌दृष्टि रहना चाहते हैं और वास्तव में यह चाहना उचित भी है। मगर पहले यह समझ लेना चाहिए कि सम्यक्त्व का अर्थ क्या है? सम्यक् का एक अर्थ प्रशंसा रूप है और दूसरा अर्थ अविपरीतता होता है। यद्यपि सच्चा सम्यक्त्व अविपरीतता में ही है पर शास्त्रकार यशस्वी कार्य भी समकित में ही गिनते हैं।

विपरीत का अर्थ उलटा और अविपरीत का अर्थ सीधा-जैसे का तैसा, होता है। जो वस्तु जैसी है उसे उसी रूप में देखना अविपरीतता है और उल्टे रूप में देखना विपरीतता है। उदाहरणार्थ—किसी ने सीप देखी। वास्तव में वह सीप है, फिर भी अगर उसे चाँदी समझता है तो उसका ज्ञान विपरीत है। काठियावाड़ में विचरते समय मैंने मृगमरीचिका देखी। वह ऐसी दिखाई देती थी मानों जल से भरा हुआ समुद्र हो। उसमें वृक्ष वगैरह की परछाई भी दिखाई देती है। ऐसा होने पर भी मृगमरीचिका को जल समझ लेना विपरीतता है।

जैसे यह विपरीतता बाह्य-पदार्थों के विषय में है, उसी प्रकार आध्यात्मिक विषय में भी विपरीतता होती है। शास्त्रोक्त वचन समझकर जो सम्यग्दृष्टि होगा वह विचार करेगा कि अगर मैंने वस्तु का जैसा का तैसा स्वरूप न समझा तो फिर मैं सम्यग्दृष्टि ही कैसा?

सीप जब कुछ दूरी पर होती है तो उसकी चमचमाहट देखकर चाँदी समझ ली जाती है। अगर उसके पास जाकर देखे तो क्या कोई सीप को चाँदी मान सकता है? नहीं। इसी प्रकार संसार के पदार्थ जब तक मोह की दृष्टि से देखे जाते हैं, तब तक वे जिस रूप में माने जाते है उसी रूप में दिखाई देते हैं, किन्तु अगर पदार्थों के मूल स्वरूप की परीक्षा की जाय तो

वे ऐसे नहीं प्रतीत होंगे, बल्कि एक जुदे रूप में दिखाई देंगे। जब पदार्थों की वास्तविकता का भान होता है और विपरीतता मिट जाती है तभी सम्यग्दृष्टिपन प्रकट होता है। सीप दूर से चाँदी मालूम होती थी, किन्तु पास जाने से वह सीप मालूम होने लगी। सीप में सीपपन तो पहले भी मौजूद था परन्तु दूरी के कारण ही सीप में विपरीतता प्रतीत होती थी और वह चांदी मालूम हो रही थी। पास जाकर देखने से विपरीतता दूर हो गई और उसकी वास्तविकता जान पड़ने लगी। इस तरह वस्तु के पास जाने से और भलीभाँति परीक्षण करने से वस्तु के विषय में ज्ञान की विपरीतता दूर होती है तथा वास्तविकता मालूम होती है और तभी जीव सम्यग्दृष्टि बनता है।

सीप की भाँति अन्य पदार्थों के विषय में भी विपरीतता मालूम होने लगती है। पदार्थों के विषय में विपरीतता हो रही है इस विषय में शास्त्र में कहा गया है— 'जीवे अजीवसन्ना, अजीवे जीवसन्ना' अर्थात् जीव को अजीव और अजीव को जीव समझना, इत्यादि दस प्रकार के मिथ्यात्व हैं। कहा जा सकता है कि कौन ऐसा मनुष्य होगा जो जीव को अजीव मानता हो? इस प्रश्न का उत्तर यह है कि जीव को अजीव मानने वाले बहुत से लोग हैं। कुछ का कहना है कि जो कुछ है, यह शरीर ही है। शरीर से भिन्न आत्मा नहीं है। यह शरीर पांच भूतों से बना है और जब पांचों भूतों का संयोग नष्ट हो जाता है तो शरीर भी नष्ट हो जाता है। इस प्रकार जीव-आत्मा को न मानने वाला भी हैं। यह भी एक प्रकार का ज्ञान है, किन्तु है यह मिथ्याज्ञान। जीव में अजीव की स्थापना करने का कारण यही है कि ऐसी स्थापना करने वाले लोग अभी तक सम्यग्ज्ञान से दूर हैं। जब वे सम्यग्ज्ञान के समीप आएंगे तो जैसे समीप जाने से सीप में चाँदी का मिथ्याज्ञान मिट जाता है, उसी प्रकार आत्मा सम्बन्धी मिथ्याज्ञान भी मिट जायेगा। उस समय उन्हें आत्मा का भान होगा।

पुराने लोग, जो आधुनिक शिक्षा से प्रभावित नहीं हुए हैं, आत्मा मानते हैं, किन्तु आधुनिक शिक्षा के रंग में रंगे हुए अनेक लोग आत्मा का अस्तित्व ही स्वीकार नहीं करते। जैसे दूर रहने के कारण मृगजल, जल

समझ लिया जाता है और सीप, चाँदी मान ली जाती है, उसी प्रकार जीवतत्त्व से दूर रहने के कारण ही लोग जीव को अजीव मान लेते हैं। अगर वे जीवतत्त्व के निकट पहुँचें तो उन्हें प्रतीत होगा कि वे भ्रमवश जिसे अजीव मान रहे थे, वह अजीव नहीं, जीव है।

आत्मा नहीं है यह कथन ही आत्मा की सिद्धि करता है। उदाहरणार्थ- अंधेरे में रस्सी सांप जान पड़ती है। किन्तु इस प्रकार का भ्रम तभी हो सकता है जब कि सांप का अस्तित्व है। सांप का कहीं अस्तित्व न होता तो सांप का भ्रम भी कैसे हो सकता था? जिसने जल देखा है वहीं मृगजल में जल की कल्पना कर सकता है; जिसने कभी कहीं जल का अनुभव नहीं किया वह मृगजल देखकर जल की कल्पना ही नहीं कर सकता। इसी प्रकार आत्मा नहीं है, यह कथन भी आत्मा का अस्तित्व ही सिद्ध करता है। आत्मा का अस्तित्व न होता तो उसका नाम ही कहाँ से आता और उसके निषेध की आवश्यकता ही क्यों थी?

आत्मा का अस्तित्व स्वीकार करने का एक क़ारण यह है कि संसार में जितने भी समासहीन पद हैं, उन सब पदों के वाच्य पदार्थ भी अवश्य होते हैं। जो पद समास युक्त हैं उनका वाच्य पदार्थ कदाचित् नहीं भी होता है मगर जिस पद में समास नहीं होता उस पद का वाच्य अवश्य होता है। आत्मा पद समासरहित है अतः उसका वाच्य आत्मा पदार्थ अवश्य होना चाहिए। उदाहरण के तौर पर शशश्रृंग पद बोला जाता है। शशश्रृंग का अर्थ है खरगोश का सींग। यह समासयुक्त पद है। इसका वाच्य कोई पदार्थ नहीं है। मगर शश और श्रृंग शब्दों को अलग अलग कर दिया जाय तो दोनों का अस्तित्व है। शश अर्थात् खरगोश और श्रृंग अर्थात् सींग, दोनों ही जगत् में विद्यमान हैं। जैसे शशश्रृंग नहीं होता, उसी प्रकार आकाशपुष्प भी नहीं होता। ऐसा होने पर भी अगर दोनों समस्त-समासयुक्त पद अलग अलग कर दिये जाएं तो दोनों का ही अस्तित्व प्रतीत होता है। इससे भलीभाँति सिद्ध है कि जितने भी समासरहित व्युत्पन्न पद हैं उनके वाच्य पदार्थ का सद्भाव अवश्य होता है। आत्मा पद भी समासरहित है, अतएव उसका

वाच्य आत्मा पदार्थ भी अवश्य है। हाथी, घोड़ा, घट, पट आदि जितने असामासिक पद हैं, उन सबके वाच्यों का आस्तित्व सिद्ध है तो फिर अकेले आत्मा का अस्तित्व क्यों नहीं होगा?

यह हुई जीव में अजीव के आरोप की बात। इसी प्रकार अजीव में भी जीव का आरोप किया जाता है। उदाहरणार्थ-कुछ लोगों का कहना है कि आत्मा एक ही है और जैसे पानी से भरे हजारों घड़ों में एक ही चन्द्रमा दिखाई देता है, उसी प्रकार यह एक ही आत्मा सब में व्याप्त है। मगर यह कथन भ्रमपूर्ण है। यहाँ उदाहरण में बतलाया गया है कि एक ही चन्द्रमा पूर्णिमा का होगा तो सभी घड़ों में पूर्णिमा का ही चन्द्र दिखायी देगा और अष्टमी का होगा तो अष्टमी का ही सब में दिखाई देगा। अगर एक ही आत्मा चन्द्रमा की तरह सब शरीरों में व्याप्त होती तो विविधता दिखाई देती हैं वह दिखाई न देती। कोई बुद्धिमान् दिखाई देता है, कोई बुद्धिहीन। कोई दुःखी है, कोई सुखी है। अगर एक ही आत्मा सर्वत्र व्याप्त होती तो यह विविधता क्यों दिखायी देती?

इस प्रकार वस्तु की ठीक तरह परीक्षा करने से विपरीतता-भ्रांति मिट जाती है और विपरीतता मिटते ही सम्यक्त्व प्राप्त हो जाता है।

साधारणतया सभी लोग ऐसा मानते है कि निश्चय में सभी का आत्मा समान है। परन्तु व्यवहार करते समय मानों यह बात भुला ही दी जाती है। 'मित्ती में सव्वभू-एसु' अर्थात् समस्त प्राणियों पर मेरा मैत्रीभाव है इस प्रकार का पाठ तो बोला जाता है, मगर जब कोई करीब दुखी या भिखारी द्वार पर आता है तब इस सिद्धान्त का पालन कितना होता है, यह देखना चाहिए। तुम्हें सम्यक्त्व प्राप्त हुआ होगा तो तुम उस भिखारी या दुखी मनुष्य को भी अपना मित्र मानोगें और उसे सुखी बनाने का प्रयत्न करोगे। इसके विपरीत अगर तुम अपने सगे-सम्बन्धी की रक्षा के लिए दौड़े जाओ परन्तु अपरिचित गरीब की रक्षा के लिए प्रयत्न न करो तो कहा जाएगा कि अभी तुम्हारे हृदय में सम्यक्त्व होगा तो सबकी रक्षा करने का दयाभाव भी अवश्य होगा। यह सम्भव नहीं कि सम्यक्त्व हो किन्तु दयाभाव न हो। अगर कोई कहे कि सोना

तो है मगर पीला नहीं है तो उससे यही कहा जायगा कि जो ऐसा है वह सच्चा सोना ही नहीं है! इसी प्रकार जिसमें चिकनापन नहीं है वह घी ही नहीं है। वह और कोई चीज होगी। इसी प्रकार हृदय में दयाभाव न हो तो यही कहा जायेगा कि सम्यकत्व प्राप्त नहीं हुआ है। जिसमें सम्यक्त्व होगा, उसमें दयाभाव अवश्य होगा। सम्यक्त्व के साथ दयाभाव का अविनाभावी सम्बन्ध है।

दर्शनसम्पन्नता

गौतम स्वामी ने दर्शन के विषय में भगवान् से प्रश्न किया है–

प्रश्न– दंसणसंपन्नयाए णं भंते ! जीवे किं जणयइ ?

उत्तर– दंसणसंपन्नयाए णं भवमिच्छत्तछेयणं करेइ, पर न विज्झायइ, परं अविज्झमाणे अणुत्तरेणं नाणदंसणेणं अप्पाणं संजोएमाणे सम्मं भावेमाणे विहरइ ।।६०।।

अर्थात्

प्रश्न– भगवान् ! दर्शन प्राप्त करने से जीव को क्या लाभ होता है?

उत्तर– गौतम ! दर्शनसम्पन्न (सम्यग्दृष्टि) जीव संसार के मूल मिथ्यात्व अज्ञान का छेदन करता है। उसके ज्ञान का प्रकाश बुझता नहीं है और उस प्रकाश में श्रेष्ठ ज्ञान तथा दर्शन से अपने आत्मा को संयोजित करके सुन्दर भावनापूर्वक विचरता है।

भगवान् ने दर्शनसम्पन्नता से मिथ्यात्व का नाश होना बतलाया है। परन्तु मिथ्यात्व का नाश तो क्षयोपशम सम्यक्त्व से भी होता है, फिर दर्शनसम्पन्नता से विशेष लाभ क्या हुआ? इसका उत्तर यह है कि जैसे खुली हवा में रक्खे हुए दीपक के बुझ जाने का भय रहता है, उसी प्रकार क्षयोपशमिक सम्यक्त्व के नष्ट होने का भी भय बना रहता है। क्षायिक सम्यक्त्व के लिए यह भय नहीं है। इसी कारण भगवान् ने अपने उत्तर में परं शब्द का प्रयोग करके यह सूचित किया है कि दर्शनसम्पन्नता से मिथ्यात्व का पूर्ण नाश होता है और वह क्षायिक सम्यक्त्व प्राप्त होता है जिसके नाश होने का भय ही नहीं रहता। दर्शनसम्पन्नता से जीव को मिथ्यात्व के नाश के साथ क्षायिक सम्यक्त्व की भी प्राप्ति होती है।

संसार-भ्रमण का प्रधान कारण मिथ्यात्व ही है। कारण के बिना कार्य नहीं होता। संसार भ्रमणरूप कार्य का कारण मिथ्यात्व है। दर्शनसम्पन्नता मिथ्यात्व का नाश करती है और कारण के अभाव में कार्य किस प्रकार हो सकता है? जो वस्तु जैसी है उससे विपरीत मानना ही मिथ्यात्व है। मित्यात्व का छेद हो जाने से संसार-भ्रमण भी नहीं करना पड़ता।

मिथ्यात्व संसार का कारण है और सम्यक्त्व मोक्ष का कारण है। दर्शनसम्पन्न व्यक्ति मिथ्यात्व का छेदन करके क्षायिक सम्यक्त्व प्राप्त करता है। या भव-स्थिति अधिक होने पर अधिक से अधिक तीन भव में केवलज्ञान प्राप्त करके मोक्ष प्राप्त करता है। क्षायोपशमिक सम्यग्दर्शन तो उत्पन्न होकर नष्ट हो जाता परन्तु क्षायिक सम्यग् दर्शन एक बार उत्पन्न होने के पश्चात् फिर नष्ट नहीं होता। क्षायिक सम्यक्त्व प्राप्त होने से परम ज्ञान और परम दर्शन प्राप्त करके दर्शन सम्पन्न व्यक्ति, आनन्दपूर्वक क्षायिक ज्ञानदर्शन में रमण करता है।

४—सम्यक्त्व के भेद

सम्यक्त्व के तीन भेद हैं :- (१) उपशम गुणों से प्राप्त होने वाला (२) क्षयोपशम गुण से प्राप्त होने वाला और (३) क्षायिक गुण से प्रकट होने वाला सम्यक्त्व। इस तीनों प्रकार के सम्यक्त्वों में कितना अन्तर है, यह बात पानी का उदाहरण देकर समझाी जाती है। एक पानी ऐसा होता है जो मलीन होता है परन्तु दवा डालने से उसका मल नीचे जम गया है। दूसरे प्रकार का पानी ऐसा होता है कि वह ऊपर से तो स्वच्छ दिखाई देता है परन्तु उसमें मैल साफ नजर आता है। तीसरे प्रकार का पानी वह है जो पहले मलीन था किन्तु उसका मैल नीचे बैठ जाने पर निर्मल पानी नितार कर लिया गया है। इस तीसरे प्रकार के पानी के फिर मलीन होने की सम्भावना नहीं है। इसी प्रकार मिथ्यात्व के विपाक में शान्त हो किन्तु प्रदेश में उदयाधीन रहता हो, वह क्षयोपशम से प्राप्त सम्यक्त्व कहलाता है। मिथ्यात्व का उदय जब प्रदेश और विपाक—दोनों से शान्त हो तब उपशम सम्यक्त्व होता है। क्षायोपशमिक सम्यक्त्व से औपशमिक सम्यक्त्व अच्छा है। तीसरा

सम्यक्त्व क्षायिक है। जब मिथ्यात्व प्रदेश और उदय—दोनों से पृथक् हो गया हो अर्थात् मिथ्यात्व किसी भी प्रदेश में अथवा उदय में न रहे तब क्षायिक सम्यक्त्व होता है।

शास्त्रों में श्रावक के लिए बारह व्रतों का विधान है। वे व्रत तो पालन करने योग्य हैं ही, परन्तु उनका मूल सम्यक्त्व है। जैसे मूल के अभाव में शाखाएं नहीं ठहरतीं, उसी प्रकार सम्यक्त्व के अभाव में शाखाएं नहीं ठहरतीं, उसी प्रकार सम्यक्त्व के अभाव में व्रत नहीं ठहरतें।

कल्पना कीजिए, एक आदमी सिर पर जरीदार पगड़ी पहने है, रेशमी कोट पहने है और यथोचित आभूषण भी पहने है, पूरी तरह शृंगार से सजा है, मगर धोती न पहने हो नंगा हो तो क्या उसका शृंगार भला दिखाई देगा? नहीं। तो जिस प्रकार संसार में सर्वप्रथम धोती पहनना आवश्यक समझा जाता है, उसी प्रकार धर्म में सर्वप्रथम सम्यक्त्व का होना नितान्त आवश्यक समझा जाता है।

शास्त्रकार कहते हैं—श्रावक का व्रतों के बिना तो काम चल भी सकता है लेकिन सम्यक्त्व के बिना नहीं चल सकता, क्योंकि जिसमें व्रत नहीं हैं, वह भी श्रावक कहला सकता है, परन्तु जिसमें सम्यक्त्व नहीं है, वह श्रावक नहीं कहला सकता।

भगवान् महावीर और बुद्ध के निर्वाण का ऐतिहासिक विश्लेषण

आचार्य श्री हस्तीमलजी महाराज

भगवान् महावीर और बुद्ध समसामयिक थे, अत; इनके निर्वाणकाल का निर्णय करते समय प्रायः सभी विद्वानों ने दोनों महापुरुषों के निर्वाणकाल को एक दूसरे का निर्वाणकाल निश्चित करने में सहायक मानकर साथ-साथ चर्चा की है। इस प्रकार के प्रयास के कारण यह समस्या सुलझाने के स्थान पर और अधिक जटिल बनी है।

वास्तविक स्थिति यह है कि भगवान् महावीर का निर्वाणकाल जितना सुनिश्चित, प्रामाणिक और असंदिग्ध है उतना ही बुद्ध का निर्वाणकाल आज तक भी अनिश्चित, अप्रामाणिक एवं संदिग्ध बना हुआ है। बुद्ध के निर्वाणकाल के संबन्ध में इतिहास के प्रसिद्ध इतिहासवेत्ताओं की आज भिन्न-भिन्न बीस प्रकार की मान्यताएं ऐतिहासिक जगत् में प्रचलित हैं। भारत के लब्धप्रतिष्ठ एतिहासज्ञ रायबहादुर पंडित गौरीशंकर हीराचन्द ओझा ने अपनी पुस्तक भारतीय प्राचीन लिपिमाला में बुद्ध निर्वाण संवत् की चर्चा करते हुए लिखा है :—

बुद्ध का निर्वाण किस वर्ष में हुआ, इसका यथार्थ निर्णय अब तक नहीं हुआ। सीलोन[१] (सिंहल द्वीप, लंका), ब्रह्मा और स्याम में बुद्ध का निर्वाण ई. संवत् से ५४४ वर्ष पूर्व होना माना जाता है और ऐसा ही आसाम के राजगुरु मानते हैं।[२] चीन वाले ई. सं. पूर्व ६३८ में उसका होना मानते हैं।[३] चीनी यात्री फाहियान ने, जो ई. सन् ४०० में यहां आया था, लिखा है कि इस समय तक निर्वाण के १४९७ वर्ष व्यतीत हुए हैं।[४] इससे बुद्ध के निर्वाण का समय ई. सन् पूर्व (१४९७-४००) - १०९७ के आस-पास मानना पड़ता है। चीनी यात्री हुएनत्सांग ने बुद्ध के निर्वाण से १००वें वर्ष में राजा अशोक

(ई. सन् पूर्व २६९ से २२७ तक) का राज्य दूर-दूर फैलना बतलाया है।[५] जिससे निर्वाणकाल ई. स. पूर्व चौथी शताब्दी के बीच आता है। डॉ. बूलर ने ई. स. पूर्व ४८३-२ और ४७२-१ के बीच[६], प्रोफेसर कर्न[७] ने ई. स. पूर्व ३८८ में, फर्गुसन[८] ने ४८१ में, जनरल कनिंगहाम[९] ने ४७८ में, मैक्समूलर[१०] ने ४७७ में, पंडित भगवानलाल इन्दरजी[११] ने ६३८ में (गया के लेख के आधार पर), मिस डफ[१२] ने ४७७ में, डॉ. बार्नेट[१३] ने ४८३ में डॉ. फ्लीट[१४] ने ४८३ में और वी. ए. स्मिथ[१५] ने ई. स. पू. ४८७ या ४८६ में निर्वाण होने का अनुमान किया है।

मुनि कल्याण विजयजी ने अपनी पुस्तक वीर निर्वाण संवत् और जैन कालगणना में अपनी ओर से प्रबल तर्क रखते हुए यह सिद्ध करने का प्रयास किया है कि महात्मा बुद्ध भगवान् महावीर से वय में २२ वर्ष ज्येष्ठ थे और बुद्ध के निर्वाण से १४ वर्ष, ५ मास और १५ दिन पश्चात् भगवान् महावीर का निर्वाण हुआ। इससे बुद्ध निर्वाण ई. पू. स. पूर्व ५१२ में होना पाया जाता है।

ख्यातनामा चीनी यात्री हुएनत्सांग ई. सन् ६३० में भारत आया था। उसने अपनी भारत-यात्रा के विवरण में लिखा है—

श्री बुद्ध देव ८० वर्ष तक जीवित रहे। उनके निर्वाण की तिथि के विषय में बहुत से मतभेद हैं। कोई वैशाख की पूर्णिमा को उनकी निर्वाण-तिथि मानता है, सर्वास्तिवादी कार्तिक पूर्णिमा को निर्वाण-तिथि मानते हैं, कोई कहते हैं कि निर्वाण को १२०० वर्ष हो गए। किन्हीं का कथन है कि १५०० वर्ष बीत गए, कोई कहते हैं कि अभी निर्वाणकाल को ९०० वर्ष से कुछ अधिक हुए हैं।[१६]

मुनि नगराज जी ने भगवान् महावीर और बुद्ध के निर्वाणकाल के सम्बन्ध में बहुत विस्तार से चर्चा करते हुए अनेक तर्क देकर यह सिद्ध करने का प्रयास किया है कि भगवान् महावीर बुद्ध से १७ वर्ष ज्येष्ठ थे और बुद्ध का निर्वाण महावीर के निर्वाण से २५ वर्ष पश्चात् हुआ। उन्होंने अपने इस अभिमत की पुष्टि में अशोक के एक शिलालेख, बर्मी इत्जाना संवत् की कालगणना में बुद्ध के जन्म, गृहत्याग, बोधिलाभ एवं निर्वाण के उल्लेख

और अवन्ती नरेश प्रद्योत एवं बुद्ध की समवयस्कता सम्बन्धी तिब्बती परम्परा, ये तीन मुख्य प्रमाण दिये हैं। पर इन प्रमाणों के आधार पर भी बुद्ध के निर्वाण का कोई एक सुनिश्चित काल नहीं निकलता।

इस प्रकार बुद्ध के निर्वाणकाल के सम्बन्ध में अनेक मनीषी इतिहास वेत्ताओं ने जो उपर्युत बीस तरह की भिन्न-भिन्न मान्यताएं रखी हैं उनमें से अधिकांशत; तर्क और अनुमान के बल पर ही आधारित हैं। किसी ठोस, अकाट्य, निष्पक्ष और सर्वमान्य प्रमाण के अभाव में कोई भी मान्यता बलवती नहीं मानी जा सकती।

हम यहाँ उन सब विद्वानों की मान्यताओं के विश्लेषण की चर्चा में न जाकर केवल उन तथ्यों और निष्पक्ष ठोस प्रमाणों को रखना ही उचित समझते हैं जिनसे कि बुद्ध के सही-सही निर्वाण समय का पता लगाया जा सकता है।

हमें आज से लगभग ढाई हजार वर्ष पहले की घटना के सम्बन्ध में निर्णय करना है। इसके लिए हमें भारत की प्राचीन धर्म-परम्पराओं के धार्मिक एवं ऐतिहासिक साहित्य का अन्तर्वेधी और तुलनात्मक दृष्टि से पर्यवेक्षण करना होगा।

यह तो सर्वविदित है कि उस समय सनातन, जैन और बौद्ध ये तीन प्रमुख धर्म-परम्पराएं मुख्य रूप से थीं जो आज भी प्रचलित हैं।

बुद्ध के जीवन के सम्बन्ध में जैनागमों में कोई विवरण उपलब्ध नहीं होता। बौद्ध शास्त्रों और साहित्य में बुद्ध के निर्वाण के सम्बन्ध में जो विवरण उपलब्ध होते हैं वे वास्तव में इतने अधिक और परस्पर विरोधी है कि उनमें से किसी एक को भी तब तक सहीं नहीं माना जा सकता जब तक कि उसको पुष्ट करने वाला प्रमाण बौद्धेत्तर अथवा बौद्ध साहित्य में उपलब्ध नहीं हो जाता।

ऐसी दशा में हमारे लिये सनातन धर्म के पौराणिक साहित्य में बुद्ध विषयक ऐतिहासिक सामग्री को खोजना आवश्यक हो जाता है। सनातन परम्परा के परम माननीय ग्रन्थ श्रीमद्भागवत पुराण के प्रथम स्कन्ध, अध्याय ६ के

श्लोक संख्या २४ में बुद्ध के सम्बन्ध में ऐतिहासिक दृष्टि से एक अत्यन्त महत्त्वपूर्ण तथ्य उपलब्ध होता है जिसकी ओर संभवतः आज तक किसी इतिहासिज्ञ की सूक्ष्म-दृष्टि नहीं गई। वह श्लोक इस प्रकार हैं—

ततः कलौ संप्रवृत्ते, सम्मोहाय सुरद्विषाम्।
बुद्धो नाम्नाजनसुतः, कीकटेषु भविष्यति।।

अर्थात् उसके बाद कलियुग आ जाने पर मगध देश (बिहार) में देवताओं के द्वेषी दैत्यों को मोहित करने के लिए अंजनी (आंजनी) के पुत्ररूप में आपका बुद्धावतार होगा।

इस श्लोक में प्रयुक्त नाम्नाजनसुतः यह पाठ किसी लिपिकार द्वारा अशुद्ध लिखा गया है ऐसा गीता प्रेस से प्रकाशित श्रीमद्भागवत, प्रथम खंड के पृष्ठ ३६ पर दिये गये टिप्पण से प्रमाणित होता है। इस श्लोक पर टिप्पण संख्या १ में लिखा है— (प्रा. पा.—जिनसुतः)

जिन शब्द का अर्थ है—राग द्वेष से रहित। राग द्वेष से रहित पुरुष के पुत्रोत्पत्ति का प्रश्न ही उपस्थित नहीं होता। वास्तव में यह शब्द था आंजनिसुतः जिसकी न पर लगी इ की मात्रा ज पर किसी प्राचीन लिपिकार द्वारा लगा दी गई। तदनन्तर किसी विद्वान् लिपिकार ने किसी जिन के पुत्र होने की संभावना को आकाश-कुसुम की तरह असंभव मानकर अजनसुतः लिख दिया।

ऐतिहासिक घटनाक्रम के पर्यवेक्षण से यह प्रमाणित होता है कि वास्तव में इस श्लोक का मूल पाठ बुद्धो नाम्नांजनिसुतः था. श्रीमद्भागवत और अन्य पुराणों में प्राचीन इतिहास को सुरक्षित रखने के लिये प्राचीन प्रतापी राजाओं का किसी घटनाक्रम के प्रसंग में नामोल्लेख किया गया है।

वस्तुतः उपर्युक्त श्लोक में महाभारतकार ने बुद्ध के प्रसंग में उस समय के प्रतापी राजा अंजन के नाम का उल्लेख किया है। बौद्ध, जैन, सनातन और भारत की उस समय की अन्य सभी धर्मपरम्पराओं के साहित्यों में बुद्ध सम्बन्धी विवरणों में बुद्ध के पिता का नाम शुद्धोदन लिखा गया है, अतः

श्रीमद्भागवत के उपरिलिखित श्लोक के आधार पर बुद्ध को अंजन का पुत्र मानना तो श्रीमद्भागवतकार की मूल भावना के साथ अन्याय करना होगा, क्योंकि वास्तव में भागवतकार ने बुद्ध को राजा अंजन की सुता आंजनी का पुत्र बताया है।

ऐसी स्थिति में उपर्युक्त पाठ में अनुस्वार के लोप और इ की मात्रा के विपर्यय वाले पाठ को शुद्धकर बुद्धो नाम्नांऽऽजनिसुतः के रूप में पढ़ा जाय तो वह शुद्ध और युक्तिसंगत होगा। किसी लिपिकार द्वारा प्रमादवश अथवा वास्तविक तथ्य के ज्ञान के अभाव में अशुद्ध रूप से लिपिबद्ध किये गये उपर्युंकित अशुद्ध पाठों को शुद्ध कर देने पर एक नितान्त नया ऐतिहासिक तथ्य संसार के समक्ष प्रकट होगा कि महात्मा बुद्ध महाराज अंजन के दौहित्र थे। अंजन-सुत्ता के सुत बुद्ध का श्रीमद्भागवतकार ने अंजनिसुत के रूप में जो परिचय दिया है वह व्याकरण के अनुसार भी बिलकुल ठीक है। जिस प्रकार रामायणकार ने जनक की पुत्री जानकी, मैथिल की पुत्री मैथिली के रूप में सीता का परिचय दिया है ठीक उसी प्रकार श्रीमद्भागवतकार ने भी अंजन की पुत्री का आंजनी के रूप में उल्लेख किया है।

यह सब केवल कल्पना की उड़ान नहीं है अपितु बर्मी बौद्ध परम्परा इस तथ्य का पूर्ण समर्थन करती है। बर्मी बौद्ध परम्परा के अनुसार बुद्ध के नाना (मातामह) महाराज अंजन शाक्य क्षत्रिय थे। उनका राज्य देवदह प्रदेश में था। महाराजा अंजन ने अपने नाम पर ई. सन् पूर्व ६४८ में १७ फरवरी को आदित्यवार के दिन ईत्जाना संवत् चलाया।[१७] बर्मी भाषा में ईत्जाना शब्द का अर्थ है अंजन।

बर्मी बौद्ध परम्परा में बुद्ध के जन्म, गृहत्याग, बोधि-प्राप्ति और निर्वाण का तिथिक्रम ईत्जाना संवत् की कालगणना में इस प्रकार दिया है :-

१. बुद्ध का जन्म ईत्जाना[१८] संवत् के ६८वें वर्ष की बैशाखी पूर्णिमा को शुक्रवार के दिन विशाखा नक्षत्र के साथ चन्द्रमा के योग के समय में हुआ।

२. बुद्ध ने दीक्षा ईत्जाना[१९] संवत् ९६ की आषाढ़ी पूर्णिमा, सोमवार के दिन चन्द्रमा का उत्तराषाढ़ा नक्षत्र के साथ योग होने के समय में ली।

३. बुद्ध को बोधि-प्राप्ति ईत्जाना[२०] संवत् १०३ की बैशाखी पूर्णमा को बुधवार के दिन चन्द्रमा का विशाखा नक्षत्र के साथ योग होने के समय में हुई।

४. बुद्ध का निर्वाण ईत्जाना संवत् १४८ की वैशाखी पूर्णिमा को मंगलवार के दिन चन्द्रमा का विशाखा नक्षत्र के साथ योग होने के समय में हुआ।

एम. गोविन्द पाइ[२१] ने बुद्ध के जीवन संबंधी ऊपर वर्णित किये गये ईत्जाना संवत् के कालक्रम को ई. सन् पूर्व के अधोवर्णित कालक्रम के रूप में आबद्ध किया है :—

बुद्ध का जन्म	:	ई. पू. ५८१, मार्च ३०, शुक्रवार
बुद्ध द्वारा गृहत्याग	:	ई. पू. ५५३, जून १८, सोमवार।
बुद्ध को बोधिलाभ	:	ई. पू. ५४६, अप्रैल ३, बुधवार।
बुद्ध निर्वाण	:	ई. पू. ५०१, अप्रैल १५, मंगलवाल।

इस प्रकार श्रीमद्भागवत और बर्मी बौद्ध परम्परा के उल्लेखों से बुद्ध के मातामह (नाना) राजा अंजन एक ऐतिहासिक राजा सिद्ध होते हैं तथा बर्मी परम्परा के अनुसार ईत्जाना संवत् के आधार पर उल्लिखित बुद्ध के जीवन की चार मुख्य घटनाओं के कालक्रम से बुद्ध की सर्वमान्य पूर्णायु ८० वर्ष की सिद्ध होने के साथ साथ यह भी प्रमाणित होता है कि बुद्ध ने २८ वर्ष की होते ही ई. पूर्व ५५३ में दीक्षा ग्रहण की। दीक्षा ग्रहण करने के ८ वर्ष पश्चात् ई. पूर्व ५४६ में जब वे ३५ वर्ष के हुए तब उन्हें बोधि-प्राप्ति हुई और ४५ वर्ष तक बौद्ध धर्म का प्रचार करने के पश्चात् ई. पूर्व ५०१ में ८० वर्ष की आयु पूर्ण करने पर उनका निर्वाण हुआ।

बुद्ध के जन्म, बुद्धबल्लाभ और निर्वाणकाल को निर्णायक रूप से प्रमाणित करने वाला दूसरा प्रमाण वायुपुराण का है, जो कि आवश्यक चूर्णि और तिब्बती बौद्ध परम्परा द्वारा कतिपय अंशों में समर्थित है। सनातन, जैन और बौद्ध परम्पराओं के युगपत् पर्यवेक्षण से बुद्ध के जन्म, बोधिलाभ और

निर्वाण सम्बन्धी अब तक के विवादास्पद जटिल और पहेली बने हुए प्रश्न का सदा सर्वदा के लिए हल निकल आता है।

इस जटिल समस्या को सुलझाने में सहायक होने वाले वायुपुराण के वे श्लोक इस प्रकार हैं :-

वृहद्रथेष्वतीतेषु वीतहोत्रेषु वर्तिषु ।। १६८
मुनिकः स्वामिनं हत्वा, पुत्रं समभिषेक्ष्यति।
मिषतां क्षत्रियाणां हि प्रद्योतो मुनिको बलात् ।। १६९
स वै प्रणतसामन्तो, भविष्ये नयवर्जितः।
त्रयोविंशत्समा राजा भविता स नरोत्तम ।। १७०

अर्थात् वार्हद्रथों (जरासंघ के वंशजो) का राज्य समाप्त हो जाने पर वीतहोत्रों के शासनकाल में मुनिक सब क्षत्रियों के देखते-देखते अपने स्वामी की हत्या कर अपने पुत्र को अवन्ती के राज्यसिंहासन पर बैठायेगा। हे राजन्! वह प्रद्योत सामन्तों को अपने वश में कर तेईस वर्ष तक न्याय-विहीन ढंग से राज्य करेगा।

अन्तिम श्लोक में जो यह उल्लेख है कि प्रद्योग २३ वर्ष तक राज्य करेगा, यह तथ्य वस्तुतः बुद्ध के साथ भगवान् महावीर के जन्म, दीक्षा, कैवल्य बोध, निर्वाण तथा पूर्ण आयु आदि कालमान को निर्णायक एवं प्रामाणिक रूप से निश्चित करने वाला तथ्य है।

तिब्बती बौद्ध परम्परा की यह मान्यता है कि जिस दिन बुद्ध का जन्म हुआ उसी दिन चण्डप्रद्योत का भी जन्म हुआ और जिस दिन चण्डप्रद्योत का अवन्ती के राजसिंहासन पर अभिषेक हुआ उसी दिन बुद्ध को बोधिलाभ हुआ।

बुद्ध की पूर्ण आयु ८० वर्ष थी, उन्होंने २८ वर्ष की उम्र में गृहत्याग किया और ३५ वर्ष की आयु में उन्हें बोधि-प्राप्ति हुई इन ऐतिहासिक तथ्यों को सभी इतिहासकार एकमत से स्वीकार करते हैं।

जिस दिन बुद्ध को बोधिलाभ हुआ उस दिन बुद्ध ३५ वर्ष के थे, इस सर्वसम्मत अभिमत के अनुसार बुद्ध और प्रद्योत के समवयस्क होने के कारण यह स्वतः प्रमाणित है कि प्रद्योत ३५ वर्ष की आयु में अवन्ती का

राजा बना। वायुपुराण के इस उल्लेख से कि प्रद्योत ने २३ वर्ष तक राज्य किया, यह स्पष्ट है कि प्रद्योग ५८ वर्ष की आयु तक शासनारूढ़ रहा। उसके पश्चात् प्रद्योत का पुत्र पालक अवन्ती का राजा बना।

जैन परम्परा के सभी प्रामाणिक प्राचीन ग्रन्थों में यह उल्लेख है कि भगवान् महावीर का जिस दिन निर्वाण हुआ उसी दिन प्रद्योत पुत्र पालक का उसके पिता की मृत्यु के पश्चात् अवन्ती में राज्याभिषेक हुआ।

इस प्रकार सनातन, और बौद्ध इन तीनों मान्यताओं द्वारा परिपुष्ट प्रमाणों के समन्वय से यह सिद्ध होता है कि जिस दिन भगवान् महावीर ने ७२ वर्ष की आयु पूर्ण कर निर्वाण प्राप्त किया उस दिन प्रद्योत का ५८ वर्ष की उम्र में देहावसान हुआ और उस दिन बुद्ध ५८ वर्ष के हो चुके थे। बुद्ध की पूरी आयु ८० वर्ष मानी गई है। इससे बुद्ध का जन्मकाल भगवान् महावीर के जन्म से १४ वर्ष पश्चात् बुद्ध का दीक्षाकाल महावीर को केवलज्ञान की प्राप्ति के आसपास, बोधिप्राप्ति भगवान् महावीर की केवली-चर्या के आठवें वर्ष में और बुद्ध का निर्वाणकाल भगवान् महावीर के निर्वाण से २२ वर्ष पश्चात् का सिद्ध होता है।

चण्डप्रद्योत भगवान् महावीर से उम्र में छोटे थे इस तथ्य की पुष्टि श्री मज्जिनदासगणि महत्तर रचित आवश्यक चूर्णी से भी होती है। चूर्णिकार ने लिखा है कि जिस समय भगवान् २८ वर्ष के हुए उस समय उनके माता-पिता का स्वर्गवास हो गया। तदनन्तर महावीर ने अपने अपरिग्रह के अनुसार प्रव्रजित होने की इच्छा व्यक्त की, पर नन्दीवर्द्धन आदि के अनुरोध पर संयम के साथ विरक्त की तरह दो वर्ष गृहवास में रहने के पश्चात् प्रव्रज्या ग्रहण करना स्वीकार किया। महावीर द्वारा इस प्रकार की स्वीकृति के पश्चात् श्रेणिक और प्रद्योत आदि कुमार वहाँ से विदा हो अपने अपने नगर की ओर लौट गये। इस सम्बन्ध में चूर्णिकार के मूल शब्द इस प्रकार हैं :—

.... ताहे सेणियपज्जोयादयो कुमारा पडिगाता, ण एस चविकत्ति।

चूर्णिकार के इस वाक्य पर वायुपुराण और महावीर-निर्वाणकाल के संदर्भ में विचार करने से ज्ञात होता है कि प्रद्योत की आयु महाराज सिद्धार्थ और

त्रिशला देवी के स्वर्ग गमन के समय १४ वर्ष की थी। तदनुसार ५२७ ई. पूर्व भगवान् महावीर का प्रामाणिक निर्वाणकाल मानने पर महावीर का जन्म ई. पूर्व ५९९ में और बुद्ध का जन्म ई. पूर्व ५८५ होना सिद्ध होता है।

इन सब तथ्यों को एक दूसरे के साथ जोड़कर विचार करने पर यह निष्कर्ष निकलता है कि भगवान् महावीर का निर्वाण ई. पूर्व ५२७ में हुआ और बुद्ध का निर्वाण भगवान् महावीर के निर्वाण से २२ वर्ष पश्चात् अर्थात् ई. पूर्व ५०५ में हुआ।

अशोक के शिलालेखों में अंकित २५६ के अंक जो विद्वानों द्वारा बुद्ध निर्वाण वर्ष के सूचक माने जाते हैं, उनसे भी यही प्रमाणित होता है कि बुद्ध का निर्वाण ईस्वी पूर्व ५०५ में हुआ। इस सम्बन्ध में संक्षिप्त विवरण निम्न प्रकार है :—

अशोक द्वारा लिखवाये गये लघु शिलालेख जो कि रूपनाथ, सहसराम और वैराट से मिले हैं,[२२] उनमें शिलालेखों के खुदवाने के काल तिथि के स्थान पर केवल २५६ का अंक खुदा है। इसके सम्बन्ध में अनेक विद्वानों का अभिमत है कि ये अंक बुद्ध के निर्वाणकाल के सूचक हो सकते हैं। उसका अनुमान है कि जिस दिन ये शिलालेख लिखवाये गये उस दिन बुद्ध की निर्वाण-प्राप्ति के २५६ वर्ष बीत चुके थे।

इतिहास-प्रसिद्ध राजा अशोक का राज्याभिषेक ई. पूर्व २९६ में हुआ, इससे सभी इतिहासज्ञ सहमत हैं। अपने राज्याभिषेक के ८ वर्ष पश्चात् अशोक ने कलिंग पर विजय प्राप्त की । कलिंग के युद्ध में हुए भीषण नरसंहार को देखकर अशोक को युद्ध से बड़ी घृणा हो गई और वह बौद्ध धर्मानुयायी बन गया। अशोक ने उपर्युक्त १ सं. के शिलालेख में यह स्वीकार किया है कि बौद्ध बनने के $२^{१}/_{२}$ वर्ष पश्चात् तक वह कोई अधिक उद्योग नहीं कर सका। उसके एक वर्ष पश्चात् वह संघ में आया।

संघ उपेत होने के पश्चात् अशोक ने अपनी और अपने राज्य की पूरी शक्ति बौद्ध धर्म के प्रचार में लगा दी। उसने भारत और बारत के बाहर के राज्यों से बौद्ध धर्म की उन्नति के लिए सन्धियाँ कीं। बोद्ध संघ की काफी अंशों में

अभ्युन्नति करने और अपनी महान् धार्मिक उपलब्धियों के पश्चात् उसने स्थान-स्थान पर अपनी धार्मिक आज्ञायों को शिलाओं पर टंकित करवाया। अनुमान लगाया जा सकता है कि इन कार्यों में कम से कम नौ-दस वर्ष तो अवश्य लगे ही होंगे। तो इस तरह उपर्युक्त शिलालेख अपने राज्याभिषेक से बीसवें वर्ष में अर्थात् ई. सन् से २४९ वर्ष पूर्व तैयार करवाये होंगे, जिस दिन कि बुद्ध का निर्वाण हुए २५६ वर्ष बीत चुके थे।

इस प्रकार के अनुमान और कल्पना के बल पर बुद्ध का निर्वाण ई. सन् ५०५ में होना पाया जाता है।

यह अनुमान प्रमाण वायुपुराण में उल्लिखित प्रद्योत के राज्यकाल के आधार पर प्रमाणित बुद्ध के निर्वाणकाल का समर्थन करता है। इस प्रकार तीन बड़ी धार्मिक परम्पराओं में उल्लिखित विभिन्न तथ्यों के आधार पर प्रमाणित एवं अशोक के शिलालेखों से समर्थित होने के कारण बुद्ध का निर्वाण ई. सन् पूर्व ५०५ ही प्रमाणित ठहरता है।

उक्त तीनों परम्पराओं के प्रामाणिक धार्मिक ग्रन्थों में प्रद्योत को युद्धप्रिय और उग्र स्वाभाव वाला बताया है, यह उल्लेखनीय समानता है। प्रद्योत के जन्म के साथ महात्मा बुद्ध का जन्म हुआ और उसके देहावसान के दिन भगवान् महावीर का निर्वाण हुआ, यह कितना अद्भुत संयोग है, जिसने प्रद्योत को एक महत्त्वपूर्ण ऐतिहासिक राजा के रूप में भारत के इतिहास में अमर बना दिया है।

इन सब अकाट्य ऐतिहासिक तथ्यों के आधार पर असंदिग्ध एवं प्रामाणिक रूप से यह कहा जा सकता है कि भगवान् महावीर का निर्वाण ई. सन् पूर्व ५२७ में और बुद्ध का निर्वाण ई. सन् पूर्व ५०५ में हुआ।

---

१. कार्प्स इन्स्क्रिप्शन्स इण्डिकेशन्स (जनरल कनिंगहाम संपादित), जि. १ की भूमिका, पृ.३

२. प्रि. ए. जि. २ यूसफुल टेबल्स, पृ. १६५।

३. वही

४. बी. बु, रे वे. व; जि. १ की भूमिका, पृ. ७५
५. बी. बु. रे वे. व; जि. १, पृ. १५०
६. इं एँ; जि. ६, पृ. १५४
७. साइक्लोपीडिया ऑफ इण्डिया जि. १, पृ. ४९२
८. कार्पस इन्स्क्रिप्शन्स इण्डिकेशन्स जि. १ की भूमिका, पृ. ९
९. वही
१०. मँ. हि. ए. सं. लि; पृ. २९८
११. इं. एँ. जि. १० पृ. ३४६
१२. ड. क्रॉ. इं, पृ. ६
१३. बा. एँ. इं., पृ. ३७
१४. ज. रॉ. ए. सो. ई. स. १९०६, पृ. ६६७
१५. स्मि. अ, हि. इं., पृ. ४७, तीसरा संस्करण
१६. भगवान् बुद्ध, पृ. ८९, भूमिका पृ. १२
१७. Prabuddha Karnataka, a Kannada Quarterly published by the Mysore University. Vol. XXVII (1945-46) No. 1 PP. 92-93. The Date of Nirvana of Lord Mahavira in Mahavira Commemoration Volume, PP. 93-94.
१८. Ibid Vol. 11 PP. 71-72.
१९. Life of Gautama, by Bigandet Vol. PP. 62-63
२०. Ibid Vol. 1 P. 97 Vol. II PP. 72-73
Ibid Vol. II P. 69
२१. Prabuddha Karnataka, a Karnatak Quarterly published by the Mysore University, Volume XXVII (1945-46) No. 1 PP 92-93 the Date of Nirvana of Lord Mahaveera Commemoration Volume PP 93-94.
२२. दर्शन दिग्दर्शन, पृ. ४४४, टिप्पण ३।
२३. जैन साहित्य और इतिहास, पृ. १८९।

जीवन और मृत्यु

डॉ. सागरमल जैन

गये थे जिसकी बारात में कभी
उसी की अर्थी आज है सजी
आ-आकर जाना, जा-जाकर आना
इसी में तो है सब कुछ पाना।

जीवन का सत्य यदि मृत्यु है
तो मृत्यु का सत्य है ज़ीवन
जी-जी मरना, मर-मर जीना
यही तो है अमृत का पीना।

जब होती है मौत, नहीं होते हम
जब होते हैं हम, मौत नहीं होती
जिससे मिलना ही कभी संभव नहीं
यात्रा में फिर कहाँ कोई अड़चन कहीं?

पतझड़ के बाद ही तो आता है वसन्त
मौत के बाद ही तो मिलता नव जीवन
सीख लिया जिसने जीना और मरना
उसको फिर क्यों और किससे डरना ?

जीवन की सार्थकता का नाम है
समाधिपूर्ण मरण
और मरण की सार्थकता है
अनन्त से मिलन।

0

वैर का विपाक

कौशम्बी नगरी में प्रति रात्रि मानों दीपावली ही मनाई जाती थी। दीनता अथवा दरिद्रता से ही कौशंबीवासियों के यहां रोज ही दीप श्रेणियां जलाई जाती थी। लगभग मध्यरात्रि के बाद ही ये दीपमालाएं कुछ मंद होती थी। उस समय विलासियों और अभिसारिकाओं के सिवा राजमार्ग पर कदाचित् ही किसी के चरण पड़ते थे। कौशंबी चोरों और लुटेरों से सुरक्षित थी।

समुद्रदत्त कुछ ही वर्षों से इस नगरी में नया आकर बसा था। लोग इसके कुल अथवा वंश से अधिक परिचित नहीं थे। परन्तु इसके पास जो सम्पत्ति थी उस पर से वह कोई प्रवासी-प्रामाणिक व्यापारी होना ही चाहिए ऐसी लोगों की मान्यता बंध गई थी।

इस समुद्रदत्त की स्त्री आज दोपहर से ही विह्वल जैसी दीख रही है। बहुत समय तक चिंतामग्न रहने के पश्चात् उसने अपनी दासी को आज्ञा दी कि देख तो आज अष्टमी है और मेरे उपवास है। रात्रि को मुझे पादरदेवी को नैवेद्य चढ़ाने जाना है। नैवेद्य तू सब तैयार रखना। तुझे मेरे साथ चलना होगा।

दासी को इस आज्ञा से आश्चर्य हुआ। परन्तु वह कुछ भी कह नहीं सकी। कभी किसी दिन नहीं, आज ही पादरदेवी की पूजा की बात इसको कैसे सूझी?

गृहणी पादरदेवी को कभी भी तो नहीं मानती है। आज ही और वह भी रात्रि के अंधेरे में गांव के एकदम छोर पर आए मंदिर में जाने की वृत्ति यह कैसे हो गई? वह जानती थी कि रात्रि के समय में यह स्थान शमशानवत् शांत और भयंकर बन जाता है। साहसी से साहसी पुरुष भी सांझ के बाद वहां पैर रखते कांप उठता है। मंदिर सदा ही खुला रहता है परन्तु इसके आसपास के खुले आंगन में अनेक प्रकार की आसुरी लीलाएं होती रहती हैं। समुद्रदत्त से इस विषय में बात करने का उसे उचित नहीं लगा। कदाचित् वह निषेध करे यह भी उसे भय था। चाहे जो हो, परन्तु समुद्रदत्त की पत्नी ने मध्य रात्रि में पादरदेवी के मंदिर में जाने का निश्चय किया।

कौशंबी की दीपमाला जैसे ही कुछ मंद हुई कि तुरंत यह सुकुमार नारी अपने हृदय को वज्र सा कठोर बना, दासी और नौकरों को साथ ले, पादरदेवी के

मंदिर को जाने को निकल पड़ी। नैवेद्य की सामग्री उसने अपने हाथ में ले दासी को दूर खड़ी रख नौकरों को चौकीदारी करने को कहा। फिर वह स्वयम् मंदिर के आंगण में गई।

देवी का दर्शन-पूजन तो बहाना मात्र ही था। वस्तुतः वह एक श्रमण की शोध में ही यहां आई थी। आज प्रातःकाल एक मुनि को आहार सामग्री बहराने के बाद ही उसने रात्रि को इस मुनि के समीप आने का निश्चय किया था। इस निश्चय के कारण ही वह दोपहर के बाद से इतनी विह्वल और अस्वस्थ हो गयी थी।

देवी के मंदिर में पैर रखते ही इसका कलेजा पहले तो धड़धड़ा उठा। यक्ष और यक्षिणियों के भयंकर चेहरे और उनकी प्रलंयकारी क्रीड़ाएं उसकी दृष्टि के सामने खड़ी हो उठी। फिर भी वह भारी से भारी जोखम उठाने को तैयार थी।

इधर ही कहीं न कहीं होगा ऐसे अस्पष्ट स्वर में बोलती यह स्त्री अकेली मंदिर के आंगन में घूम गई। एक स्थल पर श्रमण ध्यानमग्न मुद्रा में खड़े थे। नक्षत्रों के क्षीण प्रकाश उनके उज्जवल शरीर पर पड़ रहा था।

कोई भी भाविक अथवा श्रद्धालु स्त्री-पुरुष का दिल ऐसी ध्यानावस्थित मुद्रा देखते ही द्रवीभूत और गद्गद् हो सकता है। परन्तु इस अंधेरी रात्रि के आवरण के नीचे यहां तक आई इस नारी के दिल में भक्ति के स्थान में वैरवृत्ति के भाव थे। कुछ देर तक तो वह एक ओर खड़ी रही। इस मुनि के मुख की रेखाएं पढ़ती हो ऐसे वह उनको सामने से देखती रही। फिर अपने मन को दृढ़कर अस्फुटता स्वर में बोलीः यही धनदेव है। भोर हो उससे पूर्व ही इसका अस्तित्व फिर से मुझे मिटा ही देना चाहिए।

परन्तु असहाय अकेली नारी यहां क्या कर सकती है? अतः निराश होकर वह थोड़ी देर तो वहां की वहां बैठी रही और विचार करने लगी कि एक कसाई की छुरी चलाने की क्रूरता अपने में आ जाए तो मैं कितनी भाग्यशाली हो जाऊ?

परन्तु जिसको हिंसा ही करना है, जिसे वैर ही लेना है, उसको इस संसार में साधनों की क्या कमी है? उस स्त्री ने कुछ दूर पर लकड़ियों के अटाले का एक ढ़ेर देखा। उसका हृदय हर्ष से नाच उठा।

जितनी जल्दी हो सकती थी उतनी जल्दी उसने कायोत्सर्ग मुद्रा में खड़े मुनि की देह के चारों ओर सूखे काठ जमाना शुरू किया। भय से उसके हाथ पैर धूज रहे थे। पकड़े जाने में और विश्व में स्थान-स्थान पर तिरस्कृत बनने की चिंता भी उसके अंतर में जल रही थी। ज्यों ही लकड़ियाँ जमा दी गई। तुरंत

मंदिर के एक कोने में जलते दीपक की सहायता से उसने उसमें आग लगा दी और पीछे देखे बिना ही वह स्त्री अपनी दासी के साथ वहां से भाग निकली।

भोर होते ही कौशंबी में हाहाकार मच गया। एक तपस्वी वैरागी संत को खड़े का खड़ा ही किसी ने जलाकर भस्म कर दिया है, यह बात सारे गांव में तुरंत ही फैल गई। कौशंबी में ऐसा दुष्कृत्य करनेवाले मनुष्य भी बसते हैं यह जानकर सबको एक समान आघात लगा। प्रतिस्पर्धी अपने विरोधियों को सताएं, संसारी अपने स्वार्थवश दूसरे संसारी को जड़मूल से नाश करें, परन्तु इस त्यागी मुनि ने किसी का क्या बिगाड़ा था? लोगों की कल्पना ने जब काम नहीं दिया तो किसी अदृश्य शक्ति का यह घोर उपसर्ग हो ऐसी बातें होने लगी।

कौशंबी के महाराजा को इतने से संतोष नहीं हुआ। उन्होंने नगरपाल को बुलाकर आदेश दिया कि एक निर्दोष निष्पाप मुनि को बिना कारण भस्मीभूत करनेवाले अपराधी का पता लगना ही चाहिए।

नगरपाल ने खूब कुशलतापूर्वक इसकी खोज करना शुरू किया। एक दासी और एक गृहणी इस प्रकार दो जन इस देवी के मंदिर में मध्यरात्रि को आए थे इतनी सूचना मिल जाने के पश्चात् खोज में बहुत कठिनाई नहीं रही। बराबर रहस्य का पता लगाऊं इस दृष्टि से नगरपाल ने महाराज के सामने एक नारी को ला खड़ा किया। यह नारी भी अब समझ चुकी थी कि मिथ्या बचाव करने से कुछ होना जाना नहीं है। यह नारी और कोई नहीं अपितु समुद्रदत्त की गृहणी ही थी।

एक अंतःपुरवासिनी नारी के प्रति जितना सम्मान बताया जाना चाहिए उतने सम्मान के साथ महाराजा ने उसका आदर किया। और पूछा क्या यही समुद्रदत्त सेठ की स्त्री है?

कोतवाल के स्थान में अभियुक्ता नारी ने कुटिल हंसी हंसते हुए कहाः कौशाम्बी निवासियों की दृष्टि से यह ठीक है।

इन नारी के कथन में कोई गहरा भेद है ऐसा महाराजा ने तुरत ही ताड़ लिया। स्पष्ट विवरण के लिए अभियुक्ता से आग्रह किया तो उसने लज्जा अथवा संकोच त्यागकर इस प्रकार कहा :

वस्तुतः मैं जिसको भस्मीभूत कर आई हूँ, वही मेरा पति था। उनका मित्र नंदक जो आज भाग गया है, उसी के साथ हम ताम्रलिप्त से समुद्रयात्रा के लिए निकले थे। मार्ग में क्या क्या हुआ यह सब आपको कहने की आवश्यकता नहीं है।

यदि कहना न हो तो मुझे भी वह सब जानने की आवश्यकता नहीं है। मैं तो मात्र इतना ही पूछना चाहता हूँ कि आप अपने पति के प्रति इतना क्रूर कैसे हुई? न्याय करने की वृत्ति से महाराजा ने पूछा।

मैं इतनी क्रूर कैसे बनी, यह स्वयम् भी मैं नहीं जानती हूँ तो फिर मैं आपको कैसे समझा सकती हूँ। एक समय ऐसी ही क्रूर बनी थी और ऐसा माना था कि इस क्रूरता की फिर आवृत्ति न होगी परन्तु क्या कहूं मेरा भाग्यलेख ही ऐसा?

नहीं, पहले तो मैंने इनकी रुग्णता का लाभ उठाकर इन्हें समुद्र में फिकवा दिया था। वहां उनकी रक्षा हो गई हो ऐसा लगता है। फिर मैंने इन्हें श्रमण वेश में कौशंबी नगरी में भ्रमण करते देखा। मुझे लगा कि यदि इनका अस्तित्व ही नहीं मिटा देती हूं तो मैं धनदेव की पत्नी धनश्री हूं, यह रहस्य प्रकट हुए बिना नहीं रहेगा। हमारी प्रतिष्ठा सब धूल में मिल जाएगी और दुनिया हमें खूब ही धिक्कारेगी। इस भय में से छूटने को मुझे पादरदेवी के मंदिर में जाकर यह साहस करना पड़ा। मैं अपना अपराध स्वीकार करती हूं। मुझे अब पश्चाताप भी बहुत हो रहा है। परन्तु कौन जाने किस भय के वैर ने मेरी रक्तवाहिनी नसों में ऐसा विष भर दिया है यह मैं कुछ भी नहीं समझ सकती हूं। महाराज मैंने बहुत काल तक इस वैर वासना को दबाए रखा था। मैंने अपने मन को कैसे कैसे नहीं समझाया? यह सब मेरे मन के सिवाय दूसरा कोई भी नहीं जानता है। दूसरे को बताने की आवश्यकता भी नहीं है। मैं किसी रहस्यभरी गुप्त योजना में मात्र साधनरूप बनी हूँ ऐसा लगता है। परन्तु यह कहकर मैं दया अथवा अनुकंपा की भीख आपसे मांग रही हूँ, यह आप नहीं समझें।

प्रारंभ में चंडिका जैसी उग्र और रौद्र दिखनेवाली धनश्री अब शरम और लज्जानम्र बन गई थी। कौशंबी नरेश ने उसका संपूर्ण वृतांत सुना और दण्डनीति के अनुसार उसे कौशाम्बी की चारों सीमाओं से बाहर चले जाने का एक समय आदेश सुना दिया।

कुलकामिनी और कोमलांगी होते हुए भी धनश्री के देह में रहे अग्निशर्मा के जीव ने ही यह भीषण और करुण लीला की थी।

क्रमशः

JAIN BHAWAN PUBLICATIONS

P-25, Kalakar Street, Kolkata - 700 007, Phone: 2268 2655

English :

1.	Bhagavati-sutra-Text edited with English translation by K. C. Lalwani in 4 volumes:		
	Vol - 1 (satakas 1- 2)	Price : Rs.	150.00
	Vol - 2 (satakas 3- 6)		150.00
	Vol - 3 (satakas 7- 8)		150.00
	Vol - 4 (satakas 9- 11)		150.00
2.	James Burges - The Temples of Satrunjaya. Jain Bhawan. Kolkata ; 1977. pp. x+82 with 45 plates (It is the glorification of the sacred mountain Satrunjaya.)	Price : Rs.	100.00
3.	P. C. Samsukha - Essence of Jainism translated by Ganesh Lalwani.	Price : Rs.	15.00
4.	Ganesh Lalwani - Thus Sayeth Our Lord,	Price : Rs.	15.00
5.	Verses from Cidananda Translated by Ganesh Lalwani	Price : Rs.	15.00
6.	Ganesh Lalwani - Jainthology	Price : Rs.	100.00
7.	Lalwani and S. R. Banerjee- Weber's Sacred Literature of the Jains	Price : Rs.	100.00
8.	Prof. S. R. Banerjee Jainism in Different States of India	Price : Rs.	100.00
9.	Prof. S. R. Banerjee Introducing Jainism	Price : Rs.	
10.	Smt. Lata Bothra- The Harmony Within	Price : Rs.	100.00
11.	Smt. Lata Bothra- From Vardhamana- to Mahavira	Price : Rs.	100.00

Hindi :

1.	Ganesh Lalwani - Atimukta (2nd edn) Translated by Shrimati Rajkumari Begani	Price : Rs.	40.00
2.	Ganesh Lalwani - Sraman Samskriti Ki Kavita, Translated by Shrimati Rajkumari Begani	Price : Rs.	20.00
3.	Ganesh Lalwani - Nilanjana, Translated by Shrimati Rajkumari Begani	Price : Rs.	30.00
4.	Ganesh Lalwani - Chandan-Murti Translated by Shrimati Rajkumari Begani	Price : Rs.	50.00

5.	Ganesh Lalwani-Vardhaman Mahavira	Price : Rs.	60.00
6.	Ganesh Lalwani-Barsat ki Ek Raat,	Price : Rs.	45.00
7.	Ganesh Lalwani -- Panchdasi.	Price : Rs.	100.00
8.	Rajkumari Begani-Yado ke Aine me.	Price : Rs.	30.00
9.	Smt. Lata Bothra - Bhagavan Mahavira Aur Prajatantra	Price : Rs.	15.00
10.	Smt. Lata Bothra - Sanskriti Ka Adi Shrote, Jain Dharm	Price : Rs.	24.00
11.	Prof. S.R. Banerjee - Prakrit Vyakarana Praveshika	Price : Rs.	20.00
12.	Dr. Lata Bothra - Adinath Risabdev Aur Asthapad	Price : Rs.	250.00

Bengali :

1.	Ganesh Lalwani-Atimukta,	Price : Rs.	40.00
2.	Ganesh Lalwani-Sraman Sanskriti ki Kavita	Price : Rs.	20.00
3.	Puran Chand Shymsukha-Bhagavan Mahavir O Jaina Dharma.	Price : Rs.	15.00
4.	Prof. Satya Ranjan Banerjee Prasnottare Jaina-Dharma	Price : Rs.	20.00
5.	Dr. Jagatram Bhattacharya Das Baikalik Sutra	Price : Rs.	25.00
6.	Prof. Satya Ranjan Banerjee Mahavir Kathamrita	Price : Rs.	20.00
7.	Sri Yudhishthir Majhi Sarak Sanskriti O Puruliar Purakirti	Price : Rs.	20.00

Some Other Publications :

1.	Smt. Lata Bothra - Vardhamana Kaise Bane Mahavir	Price : Rs.	15.00
2.	Smt. Lata Bothra - Kesar Kyari Me Mahakta Jain Darshan	Price : Rs.	10.00
3.	Smt. Lata Bothra - Bharat Me Jain Dharma	Price : Rs.	100.00
4.	Acharya Nanesh - Samata Darshan Aur Vyavhar (Bengali)	Price : Rs.	
5.	Shri Suyesh Muniji - Jain Dharma Aur Shasnavali (Bengali)	Price : Rs.	50.00
6.	K.C.Lalwani - Sraman Bhagwan Mahavira	Price : Rs.	25.00

NAHAR
5/1 Acharya Jagadish Chandra Bose Road,
Kolkata - 700 020
Phone: 2283 3515, Resi: 2246 7757

BOYD SMITHS PVT. LTD.
8, Netaji Subhas Road
B-3/5 Gillander House, Kolkata - 700 001
Ph: (O) 2220-8105/2139,(Resi) 2329-0629/0319

KUMAR CHANDRA SINGH DUDHORIA
Azimganj House
7, Camac Street, Kolkata - 700 017
Ph: 2282-5234/0329

M/S. METROPOLITAN BOOK COMPANY
93, Park Street, Kolkata - 700 016
Ph: 2226-2418, (Resi) 2475-2730, 2476-8730

SURANA MOTORS PVT. LTD.
84 Parijat, 8th Floor, 24A, Shakespeare Sarani
Kolkata - 700 071, Ph: 2247-7450, 2283-4662

SUDIP KUMAR SINGH DUDHORIA
Indian Silk House Agencies
129, Rasbehari Avenue, Kolkata- 700 029, Ph: 2464-1186,

ASHOK KUMAR RAIDANI
M/s. Ashok Trading Corporation
Dealing in All types of Blanket and General Order Supplier
6, Temple Street, Kolkata - 700 072
Ph: 2237-4132, 2236-2072

IN THE MEMORY OF SOHANRAJ SINGHVI
VINAYMATI SINGHVI
93/4 Karaya Road, Kolkata - 700 019
Ph: (O) 2220 8967, (Resi) 2247 1750

GLOBE TRAVELS
Contact for better & Friendlier Service
11, Ho Chi Minh Sarani, Kolkata - 700 071
Ph: 2282-8181

APRAJITA
Air Conditioned Market
Kolkata - 700 071
Phone : (O) 30530222, (Resi) 24543534

DR. K.B. SINGH (M.B.B.S.)
67, S.N. Pandit Road, Kolkata - 700 025
Ph: 2455-2081, 2454-7127, Chember- 2268-8670/4207

LALCHAND DHARAMCHAND
Govt. Recognised Export House
12, India Exchange Place, Kolkata-700 001
Ph: (B) 2220-2074/8958 (D) 2220-0983/3187
Cable: SWADHARMI, Fax: (033) 2220 9755
Resi: 2464-3235/1541, Fax: (033) 2464 0547

TARUN TEXTILES (P) LTD.
203/1, Mahatma Gandhi Road, Kolkata - 700 007
Ph: 2268-8677, 2269-6097

AJAY DAGA, AJAY TRADERS
28, B.T. Road, Kolkata - 700 002
Ph: (O) 2268-9356/0950 (Fact). 2557-1697/7059

COMPUTER EXCHANGE
Park Centre' 24 Park Street
Kolkata - 700 016, Ph: 2229-5047/9110

SUNDERLAL DUGAR
R. D. B. Industries Ltd.
Regd. Off: Bikaner Building
8/1 Lal Bazar Street, Kolkata - 700 001
Ph: 2248-5146/6941/3350, Mobile: 9830032021

AMRITLAL & CO.
113B, Monohardas Katra
Ist floor, Kolkata - 700 007
Phone: (O) 2282-4649 (R) 2454-3534

ARBEITS INDIA
8/1, Middleton Road, 8th Floor, Room No.4
Kolkata - 700 071, Ph: 2229 6256/8730/1029
Resi: 2247 6526/6638/22405126
Telex: 2021 2333, ARBI IN, Fax : 2226 0174

PSCO
MECHANICAL ENGINEERS & FABRICATORS.
Howrah Amta Road, Balitikuri Howrah

M/S. POLY UDYOG
Unipack Industries
Manufacturers & Printers of HM; HDPE,
LD, LLDPE, BOPP PRINTED BAGS.
31-B, Jhowtalla Road
Kolkata - 700 017, Phone: 2247 9277, 2240 2825
Tele Fax: 22402825

SAROJ DUGAR
Fancy saree, bed covers
34/1J. Ballygunge Circular Road
Kolkata - 700 019, Phone: 2475 1458

VEEKEY ELECTRONICS
M/s. Madhur Electronics, 29/1B, Chandni Chowk
3rd floor, Kolkata - 700 013
Ph: 2352-8940/334-4140,(Resi) 2352-8387/9885

KRISHNA JUTE COMPANY
Jute Broker & Dealer
9, India Exchange Place, Kolkata - 700 001
Phone : 2220-0874/9372, 2221-0246, 30229372

ELECTO PLASTIC PRODUCTS PVT. LTD.
22 Rabindra Sarani, Kolkata - 700 073
Phone : 2236-3028, 2237-4039

BHEEKAM CHAND DEEP CHAND BHURA
M/s. D. C. Group Pvt. Ltd, Sagar Estate, 5th Floor
2, Clive Ghat Street, Kolkata - 700 001
Phone : 2220-5229/5121

MOUJIRAM PANNALAL
Citizen Umbrella
45, Armenian Street, Kolkata - 700 001
Ph : (Shop) 2242-4483/2248-8086,
(O) 2268-1396/30924653, Fax : 2271-2151,

ROYAL TOUCH OVERSEAS CORPORATION
47, Pandit Purushottam Roy Street, 2nd Floor,
Kolkata - 700 007, Phone : (033)2270-1329, 2272-1033
Fax : 91-33-22702413

NAKODA METAL
Deals in all kinds of Aluminium
32A Brabourne Road, Kolkata - 700 001
Ph: 2235-2076, 2235-5701

MUSICAL FILMS (P) LTD
9A, Esplanade East, Kolkata - 700 069

SAGAR MAL SURESH KUMAR
187, Rabindra Sarani, Kolkata - 700 007
Ph: Gaddy- 2273-1766, 2268-8846
Mobile: 9331019835, Resi : 2355-9641/7196

B.W.M.INTERNATIONAL
Manufacturers & Exporters
Peerkhanpur Road, Bhadohi - 221401 (U.P.)
Ph: (O) 05414-25178, 25779, 25778
Fax: 05414-25378 (U.P.) 0151-202256 (Bikaner)

DR. NARENDRA L. PARSON & RITA PARSON
18531 Valley Drive
Villa Park, California 92667 U.S.A.
Phone : 714-998-1447714998-2726,
Fax : 7147717607

V.S. JAIN
Royal Gems INC.
632 Vine Street, Suit# 421
Cincinnati OH 45202
Phone : 1-800-627-6339

RANJIT SINGHI
Singhi Exports (P) Ltd.
P15 New C.I.T. Road
Kolkata - 700 073

RAJIB DOOGAR
305, East Tomaras Avenue
Savoy, IL 61874-9495
USA
Ph : 001-217-355-0174/0187, e-mail : doogar@uiuc.edu

SMT. KUSUM KUMARI DOOGAR
C/o Shri P.K. Doogar,
Amil Khata, P.O. Jiaganj, Dist: Murshidabad, Pin- 742123
West Bengal, Phone: 03483-56896

M/S. SETHIA OIL INDUSTRIES LTD.
Manufactureres of De oiled cakes & Refined oil.
Lucknow Road, PO. Sitapur - 261001 (U.P.)
Phone: 05862/42017/42073

M/S. BEEKAY VANIJYA PVT. LTD.
City Centre, 19, Synagogue Street
5th Floor, Room No. 534-535, Kolkata - 700 001
Phone: 2210-3239, 2232-0144, 2238-7281
Fax: 033-2210-3253 (M) 9831001739
e-mail : bktarfab@satyam.net.in

जो हिंसात्मक प्रवृत्ति से विलग है,
वही बुद्ध, ज्ञानी हैं
WITH BEST WISHES

DEEPAK KUMAR SANDEEP KUMAR NAHATA
Dealers in Diamond
Manufactures of Precious & Semi Precious Ornaments
63A, Burtolla Street, Kolkata - 700 007,
Phone: (G) 2268-0900 (M) 9830094325

DHANDHIA BROS
6/1 Hara Prasad Dey lane,
Kolkata - 700 007
Phone: (R) 2274-6241/3474 (O) 2269-0581

In the Sweet Memory of my mother
LATE SOVABOTI DUSAJ
Shri Manilal Susaj
6A, Rabindra Sarani, Kolkata - 700 001
Phone : 2237-5869 / 6476, Mobil : 98301017091, 9830142191

With Best Compliment from :-
SURANA WOOLEN PVT. LTD.
MANUFACTURERS * IMPORTERS * EXPORTERS
67-A, Industrial Area, Rani Bazar,
Bikaner - 334 001 (India)
Phone : 22549302, 22544163 Mills
22201962, 22545065 Resi
Fax : 0151 - 22201960
E-mail : suranawl@datainfosys.net

In the memory of Badindrapat Singhji Dugar
GAUTAM DUGAR
34/1/K, Ballygunge Circular Road
Kalkata - 700 019
Phone: (O) 2475-1109/6835
(R) 2474-3566, (M) 31022126

ARIHANT JEWELLERS
Shri Mahendra Singh Nahata
M/s BB Enterprises
8A, Metro Palaza, 8th Floor 1,Ho Chi Minh Sarani,
Kolkata - 700 071, Ph: 2288 1565 / 1603

M/s. MUKUND JEWELLERS
manufactures of American Diamand
Jewellery, Gold & Silver Goods &
Dealers in imitation Jewellery
P-37A, Kalakar Street,
Kolkata - 700 007, Ph: 2232 3876

KAMAL SINGH KARNAWAT
7,Khelat Ghosh Lane, Kolkata - 700 006
Dealers in Diamonds Precious Stones
Ph: (R) 2259-3885, (M) 03332391278

N. K. JEWELLERS
Valuable Stones, Silver wares
Authorised Dealers: Titan, Timex & H. M. T.
2, Kali Krishna Tagore Street (Opp. Ganesh Talkies)
Kolkata - 700 007 (Phone : 2239-7607)

RATAN LAL DUNGARIA
16B, Ashutosh Mukherjee Road
Kolkata - 700 020, Ph: (Resi) 2455-3586

M/S. PARSON BROTHERS
18B, Sukeas Lane, Kolkata - 700 001
Phone: 2242-3870

KESARIA & CO.
Jute Tea Blenders & Packeteers Since 1921
2, Lal Bazar Street, Todi Chambers, 5th Floor
Kolkata - 700 001
Ph: (O) 2248-8576/0669/1242
(Resi) 2225-5514, 2237-8208, 2229-1783

With Best Wishes

INDUSTRIAL PUMPS & MOTOR AGENCIES

40, Strand Road, 4th Floor, R.N.3, Kolkata - 700 001

M.L. CHOPRA & CO.

Freight & Chartering Brokers

12-B, N. S. Road; Kolkata - 1

PH : 2220 5059 / 2220 1130, EMAIL : freya@cal.vsnl.co.in

With Best Compliments From-

STEELUX INDIA; CIVIL CONTACTORS

13/5 Hazi Jakaria Lane, Kolkata - 700 006

ABL INTERNATIONAL LTD.

1, Shakespeare Sarani, Kolkata - 700 071.

Ph: 2282-7615/7617/2726, Gram : Sudera

SHIV KUMAR JAIN

"Mineral House"

27A, Camac Street, Kolkata - 700 016

Ph: (Off) 2247-7880, 2247-8663, Res) 2247-8128, 2247-9546

MAHENDRA TATER

147, M. G. Road

Kolkata - 700 007, Phone : 2227-1857

M/S. SARAT CHATTERJEE& CO. (VSP) PVT. LTD.

Regd Office 2, Clive Ghat Street, (N. C. Dutta Sarani)

2nd Floor, Room No. 10, Kolkata - 700 001

Ph: 2220-7162, 2261-0540, Fax : (91)(33)2220 6400

e-mail: sccbss@cal2.vsnl.net.in

APARAJITA BOYED
M/s. Suravee Business Services Pvt. Ltd.
9/10, Sitanath Bose Lane,
Salkia, Howrah - 711 106, Ph: 2665-3666/2272
e-mail: Suravee@cal2.vsnl.net.in / sona@cal3.vsnl.net.in

SHRI JAIN SWETAMBER SEVA SAMITI
13, Narayan Prasad Babu Lane
Kolkata - 700 007, Ph: 2269-1408

BADALIA GEMS PVT. LTD.
BADALIA HOUSE
66/3, Beadon Street, Kolkata - 700 006
Phone : (O) 2554-8999/8997 (R) 2533-9985
Fax : 033 5548999, e-mail : shashibadlia@usa.net

CREATIVE
12, Dargah Road, Post Box 16127, Kolkata - 700 017
Ph: 2240 3758 / 3450 / 1690 / 0514
Fax : (033) 2240 0098, 2247 1833

JAIPUR EMPORIUM JEWELLERS
Anandlok
227 A. J. C. Bose Road, Kolkata - 700 020
Ph: 2280-0494, 2287-2650, Resi : 2358-0602, (M) 31074937

DR. G. C. GULGULIA
10, middleton Street, Kolkata - 700 071
Ph: (R) 22291925 (C) 22174695

CALTRONIX
12 India Exchange Place, 3rd Floor, Kolkata - 700 001
Phone: 2220 1958/4110

PABITRA KUMAR DOOGAR
Amil Khata, P.O. Jiaganj, Dist: Murshidabad, Pin- 742123
West Bengal, Phone: 03483-56896

SHRI VIJAY NAHATA
58, Walver Hallow Road
Upper Brook VileNew York - 11545
E-mail : nahata@aol.com

In the sweet memory of our mother
Late Karuna Kumari Kuthari
Jyoti Kumar Kuthari
12, India Exchange Place, Kolkata - 700 001
Phone : 2220 3142 (O) 2475 0995, 2476 1803 (R)
Ranjan Kumar Kuthari
1A, Vidya Sagar Street, Kolkata - 700 009
Phone : 2350 2173, 2351 6969

With Best Compliments from :-
22, Strand Road
2nd Floor
Kolkata - 700 001
Phone : 22131484, Fax : 22131488

JAIN FOOD
NOW AT
GARDEN CAFE
CALL FOR PARTY ORDER - 2439 9346
8/1 Alipore Road, Kolkata - 700 027
Phone : 2439 9346, 2280 1582
Garden Cafe Take Away : Unnayan, Survey Park
(E. M. Bye Pass) Phone : 2418 8852

In the memory of my father
Late Nawaratan mull Singhvi
N. M. SINGHVI
3E, UPASANA, 48, Kali Temple Road
Kolkata - 700 026, Phone : 2466 8186 (R)

In the sweet memory of our Father
Late Devi Singhji Kochar
Shashipal Kochar
Katra Ahluwala
Amritsar - 143 006

ऐसा विश्वास दिल में जमाते चलो
सिद्ध, अरिहन्त को मन में रमाते चलो,
वक्त आयेगा ऐसा कभी न कभी
सिद्धि पायेंगे हम भी कभी न कभी।

KUSUM CHANACHUR

Founder : Late. Sikhar Chand Churoria

Kusum
QUALITY PRODUCT

Our Quality Product of :

Anusandhan
Kolkata Nasta
Badsha Khan
Picnic
Raja
Shubham
Bhaonagari Ghantia
Jocker
Lajawab
Papri Ghantia
Rim Jhim
Tinku

MANUFACTURED BY

M/s. K. K. Food Product
Prop. Anil Kumar, Sunil Kumar Churoria
P. O. Azimganj, Dist: Murshidabad
Pin No.- 742122, West Bengal
Phone No.: 03483-253232,
Fax No.: 03483-253566

KOLKATA ADDRESS:

36, Maharshi Debendra Road, 3rd Floor Room No.- 308
Kolkata - 700 006, Phone No.: 2259-6990, 3093-2081
Fax No.: 033-2259-6989, (M) 9830423668

शस्त्र हिंसा एक से एक बढ़कर है।
किन्तु अशस्त्र अहिंसा से बढ़कर कोई शस्त्र नहीं।
अर्थात् अहिंसा से बढ़कर कोई साधना नहीं है।

THE GANGES MANUFACTURING COMPANY LIMITED

Chatterjee International Centre
33A, Jawaharlal Nehru Road,
6th Floor, Flat No. A-1
Kolkata - 700 071

Phone:

Gram "GANGJUTMIL"
Fax: + 91-33-245-7591
Telex: 021-2101 GANG IN

2226-0881
2226-0883
2226-6283
2226-6953

Mill

BANSBERIA

Dist: HOOGHLY
Pin-712 502
Phone: 2634-6441/2644-6442
Fax: 2634 6287

जैन मत तब से प्रचलित है
जबसे संसार में सृष्टि का आरम्भ हुआ।
मुझे इसमें किसी भी प्रकार की आपत्ति नहीं है
कि जैन धर्म वैदान्तिक दर्शनों से पूर्व का हैं।

Dr. Satish Chandra
Principal Sanskrit College, Kolkata

Estd. Quality Since 1940

BHANSALI

Quality. Innovation. Reliability

BHANSALI UDYOG PVT. LTD.

(Formerly: Laxman Singh Jariwala)

Balwant Jain - Chairman

A - 42, Mayapuri, Phase - 1, New Delhi - 110 064
Phone: 28114496, 28115086, 28115203
Fax: 28116184
e-mail: bhansali@mantraonline.com

शुभ कामनाओं सहित —

मनुष्य जीवन में ही सत्य कार्य करने का अवसर उपलब्ध होता है।

अहिंसा अमृत है, हिंसा विष है।

अनाम

PICK UP ALL U WANT
UNDER ONE ROOF

▶▶Groceries ▶▶ Edible Oils ▶▶ Personal Care ▶▶ Imported Pastas, Chocolates, Sauces, Gift Items, etc. ▶▶Hygiene ▶▶Baby Care ▶▶Stationery ▶▶other Household Items

Stop 2 Shop

AT YOUR COMPLETE SUPERMARKET

NAHAR PARK
45/4A, Chakraberia Road (S), Kolkata - 700025
(Near Jadu Babu's Bazar)
Phone: 24544696

Store Timings : 7.00 am to 9pm
All days open except Thursday

FREE HOME DELIVERY

All Prices BELOW M.R.P.

PARKING AVAILABLE

28 water supply schemes
315,000 metres of pipelines
110,000 kilowatts of pumping stations
180,000 million litres of treated water
13,000 kilowatts of hydel power plants

(And in place where Columbı eared to tread)

SPML

Engineering Life

SUBHASH PROJECTS & MARKETING LIMITED

113 Park street, Kolkata 700 016
Tel : 2229 8228, Fax : 2229 3882, 2245 7562
e-mail : info@subhash.com, website: www.subhash.com

Head Office: 113 Park Street, 3rd floor, South Block, Kolkata-700016 Ph:(033)2229-8228.
Registered Office: Subhash House, F-27/2 Okhla Industrial area, Phase II New Delhi-110 020
Ph: (011) 692 7091-94, Fax (011) 684 6003. Regional Office: 8/2 Ulsoor Road,
Bangalore 560-042 Ph: (080) 559 5508-15, Fax: (080) 559-5580.

Laying pipelines across one of the nation's driest region, braving temparature of 50^0 C.

Executing the entire water intake and water carrier system including treatment and allied civil works for the mammoth Bakreswar Thermal Power Project.

Bulling the water supply, fire fighting and effluent disposal system with deep pump houses in the waterlogged seashore of Paradip.

Creating the highest head-water supply scheme in a single pumping station in the world at Lunglei in Mizoram-at 880 metres, no less.

Building a floating pumping station on the fierce Brahmaputra.

Ascending 11.000 feet in snow laden Arunachal Pradesh to create an all powerful hydro-electric plant.

Delivering the impossible, on time and perfectly is the hallmark of Subhash Projects and Marketing Limited. Add to that our credo of when you dare, then alone you do. Resulting in a string of acheivements. Under the most arduous of conditions. Fulfilling the most unlikely of dreams.

Using the most advanced technology and equipment, we are known for our innovative solution. Coupled with the financial strength to back our guarantees.

Be it engineering design. Construction work or construction management. Be it environmental, infrastructural, civil and power projects. The truth is we design, build, operate and maintain with equal skill. Moreover, we follow the foolproof Engineering, Procurement and Construction System. Simply put, we are a single point responsibility. A one stop shop.

So, next time, somebody suggests that deserts by definition connote dryness, you recommend he visit us for a lesson in reality.

With Best Compliments

B JAIN JEWELLERS
Since 1926

B.C. JAIN JEWELLERS PVT. LTD.

22, Camac Street
3rd floor, Block-A
Kolkata - 700 007
Phone: 2283 6203 / 6204 / 0056
Fax : 2283 6643
Resi : 2358 6901, 2359 5054

Postal Registration No. SSRM/Kol/RMS/WB/R.N.P.-070/2004-2006.
Vol. XXIX. No. 7 TITTHAYARA October 2005
Registered with the Registrar of Newspapers for India
Under R. N. No. 3018/77

ज्ञानी वही है जो किसी भी प्राणी की हिंसा न करें। सभी जीव जीना चाहते है मरना कोई नहीं चाहता अतः संसार के त्रस और स्थावर सभी प्राणियों को जाने या अनजाने में न मारना चाहिये, न दूसरों से मरवाना चाहिये, ना ही मन वचन काया से किसी को पीड़ा पहुँचाना चाहिये।

卐

Kamal Singh Rampuria
Rampuria Mansions

17/3, Mukhram Kanoria Road, Howrah
Phone No. : 2666-7212/7225